



ऑयल किरण

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

अश्ले किरण OIL KIRAN | 2024 | वर्ष 21 अंक 34 |



नवीन क्षितिजों की ओर अग्रसर...

पत्रिका प्रबंधकीय मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री रूपज्योति फुकन
आवासी मुख्य कार्यपालक
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संरक्षक

श्री माधुर्ज्य बरुआ
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं क्षेत्र प्रशासन)
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

श्री देवाशीष बोरा
मुख्य महाप्रबंधक (क्षेत्र प्रशासन)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक

श्री दिगंत डेका
वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक मंडल

डॉ. रमणजी झा
महाप्रबंधक (राजभाषा)
ऑयल, निगमित कार्यालय, नोएडा

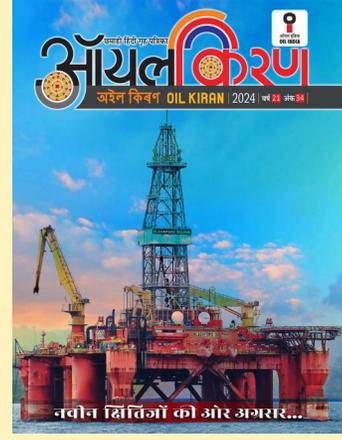
डॉ. विजय मोहन बरेजा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
ऑयल, कोलकाता कार्यालय, कोलकाता

श्री हरेकृष्ण बर्मन
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
ऑयल, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

डॉ. शैलेश त्रिपाठी
प्रबंधक (मा. सं. एवं प्रशा. - राजभाषा)
ऑयल, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर

संपादकीय कार्यालय :

राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय
डाकघर : दुलियाजान - 786602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in



ऑयल किरण

वर्ष-21, अंक-34

इस अंक में...

फिजियोथेरेपी: स्वास्थ्य के लिए वरदान	7
अपनी बेटी को यह मेरा केवल एक खत नहीं !	8
कोरा तर्क पूर्ण मन	11
सरीसृप ऊपरी-असम बेसिन के तेल क्षेत्रों में छिपा रहस्य	13
'नई महिला': मिथक या वास्तविकता	14
एक अच्छा जीवन वह है जो प्रेम से अभिप्रेरित हो...	17
आत्म दीपो भवः	19
एक यात्रा: इंजीनियरिंग कॉलेज से...	21
सोशल मीडिया की स्वास्थ्य संबंधी गलत सूचनाओं का...	21
दैनिक व्यायाम का महत्व	22
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में नौकरियों का भविष्य	23
मिरिक : एक सुखद यात्रा का अनुभव	25
शक्कर : एक मौन हत्यारा	27
जलवायु परिवर्तन के प्रति सुनम्य भारत हेतु वैकल्पिक तकनीक	28
हिंदी और भारतीय संस्कृति	31
काशा, हम बड़े न होत	33
वन के बीच एक बर्फीली शाम	33
काम का संसार	34
रसायन विभाग	34
प्रकृति की चेतावनी	35
ऑयल राजभाषा समाचार	36-43

पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

निःशुल्क एवं आंतरिक विरतण हेतु प्रकाशित।

मुद्रक - दुलियाजान प्रिंटिंग वर्क्स, दुलियाजान, दूरभाष - 94350 38552



शुभकामना संदेश

श्री रूपज्योति फुकन

आवासी मुख्य कार्यपालक
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

प्रिय ऑयल इंडियंस,

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि ऑयल इंडिया लिमिटेड की एकमात्र छमाही हिन्दी गृह पत्रिका 'ऑयल किरण' के नए अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पत्रिका में अपने लेखों एवं रचनाओं के माध्यम से योगदान देने वाले सभी लेखकों, राजभाषा सेवियों और संपादकीय टीम को विशेष रूप से बधाई देता हूँ। आपकी मेहनत और प्रतिभा को इस पत्रिका के माध्यम से पहचान मिली है और मुझे उम्मीद है कि आप आगे भी इसी तरह अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते रहेंगे।

हमारे कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए यह पत्रिका एक महत्वपूर्ण माध्यम है। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हमारे कार्यालय में राजभाषा के प्रति जागरूकता और उत्साह को बढ़ावा देगी।

एक बार फिर से पत्रिका के नए अंक के प्रकाशन पर बधाई और शुभकामनाएँ

सादर,

रूपज्योति फुकन
(रूपज्योति फुकन)



ऑयल इंडिया
OIL INDIA



शुभकामना संदेश

श्री माधुर्य बरुआ

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं क्षेत्र प्रशासन)
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान, ऑयल इंडिया लिमिटेड

ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा प्रकाशित होने वाली हिन्दी गृह-पत्रिका 'ऑयल किरण' का वर्ष 21, अंक 34 को आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है।

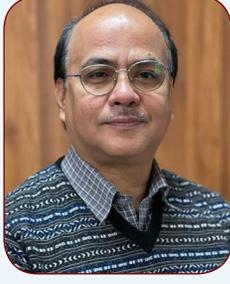
यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, बल्कि यह हमारे कार्मिकों तथा उनके आश्रितों की साहित्यिक प्रतिभा को भी प्रदर्शित करने का एक मंच प्रदान कर रही है।

मैं विशेष रूप से हमारे कार्मिकों को बधाई देता हूँ जिन्होंने राजभाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपकी प्रतिबद्धता और मेहनत के कारण ही हमारा कार्यालय राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में अग्रणी बना हुआ है।

मैं पत्रिका के संपादकीय टीम और सभी योगदानकर्ताओं को इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि यह पत्रिका हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी और हमारे कार्यालय में रचनात्मकता और सहयोग की भावना को ओर अधिक सुदृढ़ करेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(माधुर्य बरुआ)



शुभकामना संदेश

श्री देवाशीष बोरा

मुख्य महाप्रबंधक (क्षेत्र प्रशासन)
ऑयल इंडिया लिमिटेड
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

यह अत्यंत गर्व एवं हर्ष की बात है कि हमारी कंपनी की गृह पत्रिका 'ऑयल किरण' का नवीनतम अंक प्रकाशित होने जा रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं व्यवहारिक प्रयोग हेतु इस पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय कदम है।

हम सभी जानते हैं कि मानव अपने विचारों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है। इस अभिव्यक्ति का माध्यम मौखिक अथवा लिखित हो सकता है। यही भाषा जब लिखित रूप में राजभाषा के रूप में सरकारी काम-काज की भाषा बनकर प्रयोग की जाती है तो इसकी सार्थकता और भी बढ़ जाती है और मानव की भाषा न रहकर शासन तंत्र की भाषा में परिवर्तित हो जाती है। हिन्दी देश की राजभाषा ही नहीं अपितु यह हम सबकी पहचान और भारत के गौरव का प्रतीक है। अतः हम सबका यह दायित्व है कि हम स्वयं भी अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करें एवं अपने सहयोगियों को भी हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रेरित करें।

मैं पत्रिका के सभी पाठकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका को उपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सूझाव प्राप्त होते रहेंगे।

धन्यवाद और शुभकामनाएं!

डॉ. बोरा
(देवाशीष बोरा)



श्री दिगंत डेका

सम्पादकीय



ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा प्रत्येक छह महिने में निकाली जाने वाली एकमात्र हिन्दी गृह-पत्रिका 'ऑयल किरण' के वर्ष- 21, अंक- 34 को आप सब के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

भाषा किसी भी समाज की सांस्कृतिक और बौद्धिक प्रगति की आधारशिला होती है। हमारे देश में हिन्दी न केवल एक भाषा है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक भी है। हमें गर्व है कि ऑयल इंडिया लिमिटेड की एकमात्र हिन्दी गृह पत्रिका 'ऑयल किरण' इस दिशा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है। यह पत्रिका न केवल हमारे कर्मयोगियों की साहित्यिक प्रतिभा को मंच प्रदान करती है, बल्कि कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन को भी प्रतिबिंबित करती है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, और यह हर्ष का विषय है कि हमारे संगठन में कई साहित्यिक प्रतिभाएँ मौजूद हैं। हमारी पत्रिका 'ऑयल किरण' इन सृजनशील व्यक्तियों के लिए एक उत्तम मंच प्रदान कर रही है। कविता, कहानी, निबंध, यात्रा-वृत्तांत, व्यंग्य और अन्य साहित्यिक विधाओं के माध्यम से हमारे कार्मिक तथा उनके आश्रित अपनी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को साझा कर रहे हैं। यह पत्रिका न केवल भाषा और साहित्य को समृद्ध कर रही है, बल्कि कार्मिकों में सृजनात्मकता को भी बढ़ावा दे रही है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड में हिन्दी के प्रभावी उपयोग हेतु विभिन्न योजनाओं पर कार्य कर रहा है। सभी विभागों में हिन्दी में कार्य करने को सरल और सहज बनाने के लिए नवीन तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। साथ ही, सरकारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए उठाए गए कदम, विभिन्न प्रशिक्षण सत्र, कार्यशालाएँ, राजभाषा उत्सव और प्रतियोगिताएँ कार्मिकों की सक्रिय भागीदारी के बिना संभव नहीं हो सकते थे। हमें गर्व है कि हमारे अधिकारी और कर्मचारी हिन्दी में कार्य करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। उनकी यह प्रतिबद्धता न केवल कानूनी दायित्व की पूर्ति करती है, बल्कि राजभाषा के प्रति सम्मान और समर्पण को भी दर्शाती है। इसके अलावा हिन्दी को कार्यालयी कार्यों में सहजता से अपनाने के लिए प्रोत्साहन योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जिससे कर्मचारियों का उत्साहवर्धन हो सके।

हमारा उद्देश्य राजभाषा हिन्दी को केवल एक औपचारिक भाषा के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत और सहज भाषा के रूप में विकसित करना है। इसके लिए आवश्यक है कि हम सभी मिलकर हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करें, इसे अपनी दैनिक कार्यशैली का हिस्सा बनाएँ और इसे तकनीकी युग के अनुरूप और अधिक सशक्त बनाएँ।

अंततः, 'ऑयल किरण' के इस अंक के माध्यम से हम सभी कार्मिकों को हिन्दी के प्रति उनके योगदान के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देते हैं। आइए, हम सब मिलकर राजभाषा हिन्दी के प्रकाश को और अधिक प्रखर बनाएँ। हिन्दी की यह किरण निरंतर प्रज्वलित रहे, यही हमारी कामना है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

दिगंत

(दिगंत डेका)

वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा)
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

फिजियोथेरेपी: स्वास्थ्य के लिए वरदान

✍ अमित राठी

फिजियोथेरेपिस्ट

चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

आज की तेज-तरार ज़िंदगी में स्वस्थ और संतुलित जीवन जीने के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से फिट रहना बेहद ज़रूरी है। फिजियोथेरेपी, जिसे भौतिक चिकित्सा के नाम से भी जाना जाता है, स्वास्थ्य के इस सफर में एक अहम भूमिका निभाती है। यह एक वैज्ञानिक विधि है जो शरीर की मांसपेशियों, हड्डियों और नसों की समस्याओं का इलाज प्राकृतिक तरीकों से करती है।

फिजियोथेरेपी क्या है?

फिजियोथेरेपी एक चिकित्सा विधि है, जो बिना किसी दवा के शरीर की कार्यक्षमता को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके तहत व्यायाम, गर्म, ठंडी थेरेपी, और इलेक्ट्रोथेरेपी आदि जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। इसका उद्देश्य शारीरिक दर्द को कम करना, मांसपेशियों को मजबूत करना और शरीर की गतिविधियों को सामान्य करना होता है।

फिजियोथेरेपी क्यों महत्वपूर्ण है?

फिजियोथेरेपी न केवल रोगियों की शारीरिक समस्याओं को ठीक करती है, बल्कि उन्हें भावनात्मक और मानसिक राहत भी प्रदान करती है। यह जीवन की गुणवत्ता को सुधारने और रोगियों को उनके दैनिक जीवन में स्वतंत्रता प्रदान करने में मदद करती है। इसके मुख्य लाभों में शामिल हैं: **दर्द में राहत:** मांसपेशियों, जोड़ों और नसों में दर्द से पीड़ित लोगों के लिए फिजियोथेरेपी अत्यधिक प्रभावी है। यह पुराने दर्द, चोटों और सर्जरी के बाद की स्थितियों में लाभकारी होती है।

सर्जरी की ज़रूरत कम करना: कई मामलों में फिजियोथेरेपी सर्जरी से बचने का विकल्प प्रदान करती है। नियमित थेरेपी से शरीर की स्थितियों में इतना सुधार हो सकता है कि सर्जरी की आवश्यकता न पड़े।

मोटर स्किल्स को बेहतर बनाना: यह थेरेपी बच्चों और बुजुर्गों के लिए भी अत्यधिक लाभकारी है। बच्चों में शारीरिक विकास को सुचारू बनाने और बुजुर्गों में शारीरिक गतिशीलता को बनाए रखने के लिए इसका विशेष महत्व है।

फिटनेस और रोकथाम: फिजियोथेरेपी केवल बीमारियों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य को बनाए रखने और चोटों से बचाव में भी मदद करती है। यह खिलाड़ियों और फिटनेस प्रेमियों के लिए महत्वपूर्ण है ताकि वे खेलते समय चोटों से बच सकें।

फिजियोथेरेपी के प्रकार

फिजियोथेरेपी कई प्रकार की होती है और इसे रोगी की समस्या के अनुसार

विभाजित किया जाता है:

ऑर्थोपेडिक फिजियोथेरेपी: यह मांसपेशियों, हड्डियों, और जोड़ों की समस्याओं का इलाज करती है। चोट, सर्जरी के बाद की देखभाल, और गठिया के उपचार में इसका प्रमुख उपयोग होता है।

न्यूरोलॉजिकल फिजियोथेरेपी: यह मस्तिष्क, नसों और रीढ़ की हड्डी से जुड़ी बीमारियों का इलाज करती है। स्ट्रोक, मल्टीपल स्क्लेरोसिस, और पार्किंसन जैसी बीमारियों में यह लाभकारी है।

कार्डियोरेस्पिरटरी फिजियोथेरेपी: यह हृदय और फेफड़ों से संबंधित समस्याओं के लिए होती है, जैसे कि अस्थमा, क्रोनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (COPD), और दिल की बीमारियाँ।

पीडियाट्रिक फिजियोथेरेपी: यह बच्चों के शारीरिक विकास और उनकी मांसपेशियों के विकास में मदद करती है, खासकर उन बच्चों के लिए जो शारीरिक समस्याओं से जूझ रहे होते हैं।

फिजियोथेरेपी की आवश्यकता किसे होती है?

फिजियोथेरेपी की ज़रूरत हर उम्र के व्यक्ति को हो सकती है, चाहे वह कोई खिलाड़ी हो, ऑफिस में घंटों बैठकर काम करने वाला व्यक्ति हो, या बुजुर्ग व्यक्ति। नीचे कुछ स्थितियाँ दी गई हैं, जहाँ फिजियोथेरेपी की आवश्यकता महसूस होती है:

खेल के दौरान लगी चोट

किसी दुर्घटना के बाद शरीर में आई अकड़न

गठिया या स्लिप डिस्क जैसी समस्याएं

सर्जरी के बाद शारीरिक पुनर्वास

मांसपेशियों में तनाव और दर्द

निष्कर्ष

फिजियोथेरेपी, स्वस्थ जीवन की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। यह केवल उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे अपनाकर हम अपने शरीर को फिट और स्वस्थ बनाए रख सकते हैं। चाहे वह दर्द से राहत हो, शारीरिक सुधार हो, या फिटनेस बनाए रखने की बात हो, फिजियोथेरेपी एक संपूर्ण समाधान प्रदान करती है। आजकल की व्यस्त जीवनशैली में, फिजियोथेरेपी का महत्व और भी बढ़ जाता है। इसे अपनाकर हम न केवल अपने शरीर को मजबूत बना सकते हैं, बल्कि एक स्वस्थ और सक्रिय जीवन जी सकते हैं।

**अपना स्वास्थ्य संजोएं,
फिजियोथेरेपी अपनाएं!**



अपनी बेटी को यह मेरा केवल एक खत नहीं !

प्रतीक बरुआ

मुख्य अभियंता (गैस प्रबंधन सेवाएँ)

गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

प्रस्तावना:

दिनांक 1 अक्टूबर 2024 को ऑयल के आधिकारिक ई-मेल सेवा से ऑयल के राजभाषा अधिकारी दिगंत डेका जी का ई-मेल मिला। ऑयल की छमाही हिंदी गृह पत्रिका ऑयल किरण की वर्ष 21 अंक 34 के लिए रचनाओं का निमंत्रण था उसमें। हिंदी रचनाओं में पद्यों की बात करें तो वे मौलिक या फिर किसी दूसरे भाषा की मौलिक रचना के हिंदी अनुवाद होते ही हैं। लेकिन गद्य रचनाएँ मौलिक होती हैं तो पढ़ने का मज़ा ही अलग होता है। यह प्रशंसनीय है की हमारा राजभाषा विभाग मौलिक रचनाओं के लिए लेखकों को अक्सर प्रेरित करता है। लेकिन मौलिक रचना आखिर है क्या? मौलिकता की परिभाषा समझने के लिए किसी दूसरे प्रमाणित कथन का सहारा न लेकर अगर खुद अपने विचारों का वर्णन करूँ तो वही वर्णन प्रकृत रूप में "मौलिक रचना" की "मौलिक परिभाषा" होगी। मेरे मुताबिक किसी भी विषय पर केवल और केवल अपनी अवधारणा से किया गया कार्य या फिर अपने दिल से निकले अमिश्रित अनुभव या मन से निकले अप्रभावित विचार ही मौलिक कहलाने के लायक होते हैं। जो कार्य और विचार किसी भी बाहरी प्रभाव से सम्पूर्णतः मुक्त हैं, वे ही यथार्थ में मौलिकता के योग्य हैं। सही या गलत होना मौलिकता नहीं है। मौलिक होना ही सिर्फ मौलिकता है।

तो मेरे अपने जीवन में, मेरे लिए, क्या क्या मौलिक हो सकता है - काफी दिनों से मैं यह सोच रहा था। हर बार इन विचारों में मैंने यह महसूस किया कि मेरी अपनी बेटी की ओर मेरे अनुभव शायद सबसे मौलिक हैं। मेरी संतान, मेरी आत्मा का हिस्सा है। और उसके लिए मेरी भावनाएँ किसी भी बाहरी प्रभाव से मुक्त हैं। उसको अच्छी तालीम देकर मैं उसकी जिन्दगी कैसे संवारना चाहूँगा, यह एक मौलिक विषय होगी, क्योंकि यह एक ऐसा अनूठा प्रसंग है जिसकी तुलना किसी अन्य विषयवस्तु से नहीं की जा सकती। मेरे और मेरी बेटी का पिता-पुत्री का रिश्ता किसी और पिता-पुत्री के संबंध से भी नक़ल नहीं किया जा सकता। जीवन में मैंने जो कुछ भी सीखा है, वह जिस तरह से मैं उसे प्रदान करूँगा या करना चाहूँगा, वह हस्तांतरण मौलिक होगा क्योंकि अपनी बेटी के साथ मेरा रिश्ता वास्तविकता में मौलिक है, और यह किसी और चीज़ या व्यक्ति के प्रभाव से परे है। लंबे समय से मैं उसके साथ कुछ मौलिक अनुभव साझा करना चाहता था, जो मुझे विश्वास है कि उसके जीवन को बेहतर बनाने में सहायक होंगे। कभी सोचता हूँ, क्या वह इतनी बड़ी हो गयी है कि यह सब समझ पाए? फिर खयाल आता है कि आखिर वह मेरी बेटी है और मेरे दिल की बात, मेरे मन के

विचार वह ज़रूर समझ पायेगी। मैं यह दोहराना चाहूँगा की मेरे विचार मौलिक तो हैं, लेकिन मेरे दृष्टिकोण के सही-गलत का फैसला पाठक और विशेषतः मेरी बेटी के हाथ में है। मैं अपनी भावनाओं का वकील बनकर यहाँ खड़ा नहीं होना चाहता और बेटी के लिए किसी प्रकार के उपदेशक की तरह नहीं दीखना चाहता। मैं केवल एक अग्रज मित्र की तरह अपने अनुभव अपनी बेटी के साथ एक खत के द्वारा बांटना चाहता हूँ। तो यह लेखन सिर्फ एक खत नहीं, बल्कि उसकी भलाई के लिए उसको लिखे हुए मेरे मौलिक विचारों का एक संक्षिप्त रूप मात्र है।

मूल भाग:

प्रिय बेटी,

आशा है तुम सुखी हो ! सुखी हो - मैं जैसे तुम्हारा लालन पालन कर पा रहा हूँ; सुखी हो - मैं जिस तरह से तुम्हारे पिता होने के उपयुक्त बनने हेतु प्रयत्न कर रहा हूँ। आशा करता हूँ, मैं तुम्हारी प्रत्याशाओं के साथ न्याय कर पा रहा हूँ।

धीरे धीरे तुम बड़ी हो रही हो। मैं यह देख के प्रसन्न हूँ कि तुम्हारा एक अच्छा दिल है। थोड़ी शरारती हो, लेकिन उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं। घर से विद्यालय, विद्यालय से नियोग; जीवन में हम जितना आगे जाते हैं, उतना ही कठोर से कठोर आचरण-अनुशासन के नियमों का पालन करना होता है। तो अभी अपने घर में ही थोड़ा खुलकर नहीं जियोगी, थोड़ी शरारत नहीं करोगी तो बाद में जिन्दगी कब मौका देगी ? माता-पिता संतान की कितनी भी अच्छी तरह से परवरिश क्यों न करें, कुछ चीज़ें शायद भगवान या फिर कोई अदृश्य सर्व-शक्तिमान ही तय करते हैं। शैशव से ही मैंने तुम्हारा एक सहानुभूतिशील मन देखा है और मुझे खुशी है कि तुम एक अच्छा इंसान बनने की तरफ अपने पहले कदम रख चुकी हो। हमेशा की तरह अब भी कहता हूँ - सफल बनना या फिर मेधावी बनना प्राथमिकता नहीं है। सफल बनना निश्चित रूप से आसान नहीं है, लेकिन फिर भी दुनिया में करोड़ों मेधावी और सफल लोग मिल जायेंगे। फिर भी चारों तरफ इतनी समस्याएं, तकलीफ क्यों दिखती हैं ? क्योंकि दुनिया में अच्छाई की कमी है। तो सफल होने के लिए संघर्ष के साथ साथ हमेशा एक अच्छा इंसान बनने की कोशिश करना।

कठिन परिश्रम - यह एक सापेक्ष अवधारणा है। मैं अगर तुम्हें कठिन परिश्रम करने को कहूँ तो वह निश्चित रूप से तुम्हारी पढ़ाई और पाठ्येतर कार्यों के लिए होगी। परंतु तुम और मैं सोच भी नहीं सकते कि इसी दुनिया में, इसी हवा में सांस लेकर ऐसे लोग रहते हैं जो सुबह से शाम तक कठोर से कठोर परिश्रम करके घातक बाधाओं को पार कर रात तक सिर्फ जिंदा अगर बच जाएँ तो वही उनके परिश्रम की सफलता

है। पृथ्वी के किसी भी युद्ध पीड़ित क्षेत्र के बच्चे से पूछें या फिर सरहद पे तैनात किसी सैनिक से, उनके परिश्रम के सामने हमारे जीवन की कठिनाइयां शायद सामान्य लगेंगी। इसे हम उपरवाले की दया कहें या अपना सौभाग्य, हमें लाखों करोड़ों लोगों से अच्छा जीवन व्यतित कर पाने का सौभाग्य मिला है। मेरी बस यही इच्छा है की इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठा कर तुम हमेशा स्वयं के सर्वश्रेष्ठ संस्करण बनने की कोशिश करना। तुम्हारी सफलता ऐसी होनी चाहिए जो की न सिर्फ तुम्हारे जीवन को विकसित करे बल्कि समाज में तुम्हारे परिश्रमों से दृश्यमान और सकारात्मक परिवर्तन भी आये।

याद रखना - सफलता की दौरे में दंभ और अहंकार रोड़े अटकाते हैं। पढ़ाई के दौरान किसी भी परीक्षा में सफलता और उत्तरवर्ती जीवन में किसी भी व्यवसाय, नौकरी या नियोग के दौरान पायी गयी छोटी-बड़ी सफलताओं में दंभ न करना। तुम अगर स्कूल या राज्जिक परीक्षा में अव्वल दर्जे का स्थान भी लेकर आयीं तो भी याद रखना की कोई इंसान किसी और जगह किसी परीक्षा में शायद पूरी दुनिया में शीर्ष स्थान पर अधिष्ठित है। भविष्य में अपने व्यवसाय या कार्यस्थल में अगर तुमने कुछ असाधारण सफलता भी हासिल की, तो यह मत भूलना की दुनिया में ऐसे भी लोग हैं जिनकी सफलताओं ने समस्त विश्व को प्रगति के पथ पर ला खड़ा किया है। क्या तुम्हे पता है, अमरीकी टेस्ला उद्योग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एलोन मस्क ने हाल ही में घोषणा की है कि उनकी ब्रेन-चिप स्टार्टअप उद्योग न्यूरलिंग को अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफ़.डी.ए) से एक प्रायोगिक प्रत्यारोपण उपकरण के लिए मंजूरी मिल गई है जो उन अंधे लोगों को भी दृष्टि प्रदान करेगा जिन्होंने अपनी आँखें और ऑप्टिक तंत्रिका दोनों ही खो दी हैं। यह एक वास्तविक अभूतपूर्व मानवीय उपलब्धि है।

हालाँकि मैं सफलता पाने के लिए तुम पर कोई दबाव नहीं डालना चाहता, लेकिन शायद तुम भी अपने जीवन में ऐसी कोई विस्मयकारी सफलता हासिल कर पाओ, मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है। किन्तु फिर भी याद रखना, जीवन की सच्ची सिद्धि किसी छोटी-बड़ी पार्थिव सफलता से दरअसल नहीं मापी जाती। अपने विद्यालय में शिक्षा समाप्त के बहुत सालों बाद भी अगर शिक्षक, प्रशिक्षक और विद्यालय के कार्यकर्ता तुम्हारे व्यवहार का गुणगान करें तथा भविष्य में तुम्हारे नियोग से सेवा-निवृत्त होने के सालों बाद भी अगर कार्यालय के चपरासी से लेकर शीर्ष अधिकारी तुम्हारी ईमानदारी के किस्से नए प्रवेशियों को सुनाये, तो यह होगी तुम्हारी सच्ची सफलता! आज 10 अक्टूबर 2024 को यह निबंध जब मैं लिख रहा था, तभी संयोगवश भारत के प्रख्यात समाजसेवी एवं उद्योगपति रतन टाटा जी



के देहांत का दुःखद समाचार मिला। यह उल्लेख योग्य है की भारत में उनसे भी अमीर कई अरबपति लोग हैं, लेकिन रतन टाटा जी के प्रति लोगों के प्यार और सम्मान के स्तर को उनसे ज्यादा अमीर कोई भी व्यक्ति शायद कभी छु नहीं पायेगा। संपत्ति और पराक्रम कभी भी विनम्रता को पराजित नहीं कर सकते। बेटी, मुझे आशा है की तुम मेरी बात समझ पा रही हो।

जीवन के भिन्न भिन्न भागों में कई लोगों से तुम्हारा परिचय होगा। विद्यालय के सहपाठी से लेकर कार्यालय के सहकर्मी तक सभी लोगों से हमेशा सम्मानपूर्वक व्यवहार करना। अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए हर तिरस्कार का सत्कार से सामना करना। तुमसे अगर कोई कम सक्षम दिखे, वह किसी और कौशल में तुमसे कहीं अधिक कुशल हो सकता है। तुम हमेशा ऐसे लोगों के प्रति समवेदनापूर्ण रहना जो तुम्हारा अनादर करते हैं। हो सकता है कि किसी अन्य विषय को लेकर अपनी निराशा व्यक्त करने का उनके पास कोई और रास्ता न हो !! रिश्तेदारों के अलावा जीवन में लग भग बाकी सभी लोगों से या तो शिक्षा या फिर रोजगार या कभी कभी पर्यटन के बहाने मुलाकात होती है। सभी लोगों की अपनी अपनी मनोदृष्टि होती है जो की शायद तुम्हारी अभिवृत्ति से मेल न खाती हो। मत में अंतर कभी भी बड़े मतभेद या संबंधों में विच्छेद का कारण नहीं बनना चाहिए। यह याद रखना आवयश्यक है की तुमसे दोस्ती या सहकर्मी का रिश्ता निभाने के बजाय लोग विद्यालय में विद्यार्जन के लक्ष्य से और कार्यालय में जीविका हेतु प्रमुख रूप से उपस्थित हुए हैं।

आदि से अंत तक, जीवन में पक्ष जुटाव जैसी निकृष्ट मनोवृत्तियों से दूर रहकर हमेशा निष्कपट रिश्तों पर ध्यान केंद्रित करना। महाभारत में अभिमन्यु के विरुद्ध चक्रव्यूह की रचना किसी और ने नहीं स्वयं गुरु द्रोणाचार्य ने की थी। सबसे अहानिकर दिखने वाले और सत्यनिष्ठा से

चलने वाले व्यक्ति भी किसी विचित्र कारणवश तुम्हारे विरुद्ध षड्यंत्र कर सकते हैं। पक्षपात के चक्रव्यूह से निकलने के लिए परिश्रम और सत्यता का सहारा लेना। इस तरह चक्रव्यूह को भेद पाओ या न पाओ लेकिन खुद की नज़रों से कभी नहीं गिरोगी। जब तक खुद से हार न जाओ, कोई दूसरा तुम्हे नहीं हरा सकता। कोई भी कठिन परिस्थिति क्यों न आये, पक्षपात और षड्यंत्र न करना और अच्छी बने रहना बेटी!

तुम्हारी दादा-दादी अर्थात मेरे माता-पिता की छत्रछाया में मैंने अपना प्रारंभिक जीवन व्यतीत किया। अब मेरे जीविका की बाध्यताओं के कारण तुम और हम उनसे दूर रहते हैं। केवल कुछ सौ किलोमीटर दूर रहने के बावजूद मैं अपने दैनिक जीवन में उनकी अनुपस्थिति महसूस करता

हूँ। वे पल याद आते हैं जब मेरे माता-पिता मेरी बड़ी से बड़ी गलती को भी नजर अंदाज़ कर दिया करते थे, मेरे इरादों को गलत नहीं समझते थे। अब जब मैं उनकी छत्रछाया से दूर दुनिया में तूफानों का खुद सामना कर रहा हूँ तो दिख रहा है की मेरी गलती न होते हुए भी मुझे सूली पर चढ़ाने को कुछ लोग बेकरार हैं, मेरी किसी भी छोटी-बड़ी कामयाबी से वे लोग खुश नहीं लग रहे। दो चार लोगों के सामने मेरी झूठी आलोचना करके कैसे मेरी छवि को बिगाड़ा जा सकता है, वे लोग शायद उसी में व्यस्त हैं। लेकिन उन सभी लोगों के प्रति मेरी कृतज्ञता है। पूछो क्यों?? क्योंकि वे लोग ही मेरे माता-पिता की महानता का एहसास मुझे दिला रहे हैं। अपनों और परायों में अंतर वही लोग मुझे हर दिन, हर पल समझा रहे हैं !!

वर्तमान समय में तुम हमारे, मतलब अपने माता पिता के, साथ हो। जितने दिन हम एक साथ हैं, क्यों न हम एक दूसरे को ज्यादा से ज्यादा समय दें? क्योंकि एक दिन दुनिया में अपनी पहचान बनाने घर की चौखट को पार कर तुम्हे जाना ही होगा। तब तुम्हे हमारी जितनी याद आएगी उससे ज्यादा हमें तुम्हारी कमी अधिक महसूस होगी। अब यह मेरा ऋणात्मक सुझाव प्रतीत हो सकता है लेकिन यह हमेशा याद रखना की जब भी तुम घर के बाहर कदम रखो, यह दुनिया जितनी भी अपनी क्यों न लगे, दरअसल ज्यादातर परिस्थितियों में बेगानी है। ऐसा तुम्हारे साथ भी हो सकता है की तुम्हारी किसी भी छोटी बड़ी गलती को माफ़ न किया जाए, तुम्हारे सीधेपन को विद्रोह समझा जाए। कर्म-जीवन में तुम्हारे साथ भी ऐसा हो सकता है की दिन भर, महीने भर, साल भर काम करने के बाद भी तुम्हे उचित पदोन्नति तो क्या प्रोत्साहन के दो अच्छे शब्द तक सुनने को न मिले। ऐसा भी हो सकता है की तुम्हारे हर सच्चे इरादे का लोग मज़ाक उड़ाए, तुम्हारे अस्तित्व तक का वे मज़ाक उड़ाएं! तब अपने माता-पिता को याद करना और अपना कार्य पूरी ईमानदारी से करते रहना। हमेशा याद रखना कि तुम अपने लिए कुछ हासिल करने के लिए और समाज में धनात्मक परिवर्तन के लिए पढ़ाई या काम करोगी, न कि किसी यादृच्छिक व्यक्ति को प्रभावित करने के लिए! यथार्थ में माता-पिता ही दो ऐसे शख्स होते हैं जो तुम्हारी सच्ची नियत को समझते हैं, गलतियाँ करने पर तुम्हे क्षमा कर देते हैं और निःस्वार्थ होकर तुम्हे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके अलावा घर की चौखट को पार करने के बाद जीवन में ज्यादा से ज्यादा तुम्हे क्रूरता, अवहेलना, चापलूसी इत्यादि दिखने की सम्भावना ज्यादा है। आयल किरण के पिछले संस्करण यानि वर्ष 21 अंक 33 में मेरी "ये दर्द भी अजीब है, कभी आंसू बहाती है तो कभी शायरी!" शीर्षक रचना की अंतिम पंक्तियों में मैंने लिखा है :

फ़ायदेमंद हूँ...
तो लाज़िम हूँ!
जरूरतमंद हूँ...
तो बस मुलाज़िम हूँ !!

इसका अर्थ यह है की जीवन में तुम्हे अक्सर तब तक आवश्यक होने का एहसास दिलाया जायेगा जब तक तुम किसी के लिए लाभदायक रहो। जब भी तुम्हारी अहमियत खत्म हो गयी और तुम्हारी अपनी ज़रूरतें सामने आ गयीं और बढ़ने लगीं, तब तुम्हारा आदर भी उसी अनुपात में कम होता जायेगा। इसका निदान पाने के लिए जिन लोगों के साथ तुम्हारा व्यक्तिगत या व्यावसायिक संबंध रहेगा उनकी नैतिकता और स्वार्थपरता का मूल्यांकन महत्वपूर्ण होगा। सर पर जब काले बादल हों, तब कौन तुम्हारे लिए पहले छाता निकालता है उसपे ज़रूर गौर करना! जीवन के हर स्तर पर अपने से अधिक ओहदे के आसन को सम्मान देना, लेकिन आसन में आसित व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत सम्मान उसके चरित्र, सत्यनिष्ठा और तुम्हारे प्रति उसके व्यवहार के ऊपर आधारित रखना। किसी का उपकार कर पाओ या न पाओ, कभी अपकार न करना!

उपर्युक्त सतर्कता का पालन करते हुए किसी भी समय पर कभी किसी के बारे में जल्दबाज़ी में निर्णय मत लेना। क्योंकि कठोर शब्दों के पीछे कई बार शुभ-चिंतन भी होता है। सबकी जीवनरेखा अलग अलग होती है। यदि मुझे या किसी और परामर्शदाता को बड़ी संख्या में अकृतज्ञ और आत्ममोही व्यक्तियों का सामना करने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है, तो यह अनिवार्य नहीं की तुम्हारी दशा भी मेरी या किसी दूसरे हतभाग्य मनुष्य जैसी हो। मैं बस तुम्हे संकेत मात्र दे रहा हूँ की सर्वोत्तम परिस्थिति की अपेक्षा में आशावादी रहना लेकिन सबसे प्रतिकूल परिस्थितियों के लिए भी तैयार रहना।

किसी विषय या व्यक्ति के संदर्भ में अगर निर्णय लेना ही है तो कभी कोई पूर्वाग्रह मत रखना। निर्णय लेने से पहले सदैव उपलब्ध वास्तविक जानकारी और अपने विवेक पर भरोसा करना। किसी दूसरे व्यक्ति की राय से प्रभावित होकर किसी तीसरे व्यक्ति को गलत या सही ठहराना अनुचित है। शिक्षा से कर्म जीवन तक और जीवन के हर पड़ाव पर इस बात को हमेशा याद रखना। मेरे विद्यार्जन के समय विद्यालय के एक सहपाठी दीपक के साथ गहरी दोस्ती हुई थी। हम अक्सर एक दूसरे के साथ खेलते, एक दूसरे के घर खाना खाते और बहुत समय एक साथ बिताते। फिर आठवीं कक्षा के दौरान उसके बारे में किसी दूसरे ने मेरे कान भरे। मैं मानता हूँ कि उस दौरान मैं अपरिपक्व था। दीपक को मैंने बहुत भला बुरा कहा और उससे नाता तोड़ दिया। रिश्ता ऐसा टूटा की दसवीं कक्षा के बाद विद्यालय से विदा लेने तक मेरी उससे कोई बात चित नहीं हुई। उच्चतर माध्यमिक में दीपक और मैं अलग अलग महाविद्यालयों में भर्ती हो गए। तब तक मेरे जांच पड़ताल से मुझे यह ज्ञात हो गया था की उस समय उसकी कोई गलती नहीं थी और हमारी दोस्ती तोड़ने की वह सिर्फ एक साज़िश थी। तब तक वह मुझसे बहुत दूर हो चूका था। दीपक अब हमारे जन्म स्थान में ही जिला अदालत में वकालत करता है। कुछ महीनों पहले मेरे पिता ने मुझे बताया की किसी भी कानूनी कार्यवाही या दस्तावेजों का काम हों, तो दीपक खुद सामने

आकर मेरे पिता की बहुत मदद करता है। दीपक के कारण पिताजी को बहुत बार अपने कार्यों में सहायता मिली है। पिताजी ने यह भी बताया की दीपक जब भी मिलता है, मेरे और हमारे परिवार के बारे में पूछता है। यह सब सुनकर मुझे कितना दुःख हुआ और मैंने कितना लज्जित अनुभव किया मैं बता नहीं सकता। उससे माफ़ी मांगने की मैंने बहुत कोशिश की लेकिन कभी साहस नहीं जुटा पाया। अब तो शायद मैं उसके माफ़ी के भी लायक नहीं हूँ। लेकिन मेरे जीवन का यह अध्याय तुम्हारे लिए एक बड़ा उदाहरण है। तुम्हारा पिता हूँ, इसका मतलब यह नहीं कि मैंने गलतियाँ नहीं की। सभी पराये लोग बुरे नहीं होते, कुछ अपनों से भी ज्यादा अपने होते हैं। तो बेटी, किसी के भी संदर्भ में कोई निर्णय लेने में जल्दबाज़ी न करना और अपना व्यवहार हमेशा नम्र रखना।

विषय गंभीर है क्योंकि यह तुम्हारी ज़िन्दगी का सवाल है। लेकिन, ज़िन्दगी सिर्फ गंभीरता से बिताने वाली वास्तविकता नहीं है। ज़िन्दगी सिर्फ एक बार का वह मज़ेदार सफ़र है जिसे तुम्हें खुलके जीना है! हर परिस्थिति में मुस्कुराते रहना और सामने आई समस्याओं का सकारात्मक समाधान खोजने का प्रयास करना। पिता के रूप में सतर्क करना मेरा कर्तव्य है। लेकिन इंसान को गलतियों से ही सच्ची सबक मिलती है। गलतियाँ मैंने और सबने की हैं। तुम से भी गलतियाँ होंगी। गलतियों से कभी उदास न होना और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना। सफलता की अराजक दौड़ में लोग अपनी मासूमियत खो देते हैं। तुम हमेशा अपनी सरलता कायम रखना। दुनिया तुम्हें सही कहे या ग़लत,

तुम पास रहो या दूर, तुम्हारे माता-पिता हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगे, क्योंकि हमें यह विश्वास है की अंततः तुम उसी राह पर अपने कदम रखोगी जो सही है। सच्चाई और अच्छाई की राह में डटे रहकर स्वावलम्बिता से जीवन का आनंद उठाने से बड़ी तृप्ति शायद और किसी कार्य में नहीं। अपनी ज़िन्दगी ज़िंदादिली से जीना बेटी !!

तुम्हारा दोस्त और पिता,
प्रतीक

उपसंहार:

पत्र कहूँ या फिर अपने विचारों का अक्षरांकन, अगर अपनी बेटी को लिखे इस विवरण का आत्म-मूल्यांकन करूँ तो विवरण में एक दो जगहों पर यह एहसास होता है की इनमें से कुछ विचार और तालीम तो हर किसी पिता को अपनी संतान को प्रदान करने की इच्छा होगी। लेकिन फिर यह दृष्टिकोण भी सामने आता है की मेरे विचार मेरे अपने तज़ुर्बे पर आधारित हैं। अगर किसी और के अनुभवों के साथ मेरे अनुभवों की समानता देखी जाती है तो वह महज़ एक संयोग होगा। इसमें मौलिकता यह भी है की इन विचारों को मैंने न सिर्फ इस पत्र के द्वारा व्यक्त किया बल्कि पाठकों के आकलन के लिए भी इन्हे सार्वजनिक कर रहा हूँ। ऐसे कई अन्य पहलू हैं जिन्हें मैं अपनी बेटी को बताना चाहूँगा, लेकिन अभी के लिए बस इतना ही! आखिर में, मैं अपनी इच्छा फिर स्पष्ट कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ मेरी संतान एक अच्छा इंसान बने। मैं चाहता हूँ हर व्यक्ति के संतान अच्छे इंसान बनें। आशा है कि वे एक-दूसरे से ईर्ष्या नहीं करेंगे और समाज की भलाई के लिए काम करेंगे! □

कोरा तर्कपूर्ण मन

नंद दुलाल सेन,

कनिष्ठ कार्यालय सहायक-1

तकनीकी लेखा परीक्षा विभाग, दुलियाजान

कोरा तर्कपूर्ण मनुष्य चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है वह उपयोग करने वाले हाथों को ही लहलुहान कर देता है। जे रॉबर्ट ओपेन हाइमर, अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक व परमाणु बम के जनक, के ऊपर बनी फिल्म, ओपेन हाइमर हमें यह बताती है कि किस प्रकार परमाणु की विशेषताओं का प्रयोग कर ऊर्जा तथा बाद में बम बना लेना, जबकि अमेरिका द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल है, तर्कपूर्ण तो है; पर यह कोरा तर्क तब बन जाता है, जब वह उसे परमाणु बम के मानवता पर पड़ सकने वाले विनाश को नहीं देख पाता तथा यही कोरा तर्क जहां एक ओर हिरोशिमा व नागासाकी को लहलुहान करता है, वही अंततः ओपेन हाइमर के विखंडित व दुखी व्यक्ति बन जाने के रूप में उन्हें ही लहलुहान कर देता है।

अब सीधा सा प्रश्न हमारे मन में यही उठता है कि आखिर कोरा तर्कपूर्ण मन क्या है? यह खतरनाक क्यों है? इसकी भयावता को उदाहरण से



समझा जा सकता है? तथा आदर्श स्थिति क्या होनी चाहिए?

कोरा तर्कपूर्ण उसे मन स्थिति को इंगित करता है जब मनुष्य केवल और केवल तार को तथ्यों सिद्धांतों का अनुसरण करता है तथा इन तर्कों को स्थिति निरपेक्ष मानकर हर परिस्थिति में इसी प्रकार चिंतन व निर्णय करता है। जैसे इमैनुअल कांट ने कहा है - तर्क से बढ़कर कुछ भी नहीं है। यदि मन कोरा तर्कपूर्ण मन हमें इतना तार्किक बनाता है, तो यह चाकू कैसे बन सकता है? इसका जवाब यह है कि केवल तर्कों पर कार्य करने से, पहली चीज तो हम हमेशा सही निर्णय नहीं ले पाएंगे क्योंकि हमें कई स्थानों पर भावात्मक होने की आवश्यकता होती है, ताकि उसे स्थिति से जुड़कर हम पूर्ण न्याय कर पाए, जैसे-भारत केवल तार्किक रहता तो कोविद महामारी में 'चैक्सिन मैत्री' के माध्यम से विकासशील देशों की मदद नहीं कर पाता तथा अत्यधिक तार्किक होने से दूसरा नुकसान भी है-व्यक्ति यांत्रिक बन जाता है।

अगर हमें यह चीज समझनी है तो भारत वह विश्व भर में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे कई उदाहरण है, जो इस चीज की पुष्टि करते हैं।

सामाजिक क्षेत्र में केवल कोरी मानसिकता का यह तर्क है कि स्त्रियां शारीरिक रूप से पुरुषों से कमजोर हैं, अतः द्वितीय श्रेणी की नागरिक हैं, कई सदियों से हमारे समाज को लहलुहान करता रहा है। सैन्य बलों में लंबे समय तक कॉम्बैट भूमिका, इसी तर्क के कारण महिलाओं को नहीं दी गई, जिसने अंततः अवनी चतुर्वेदी की ही योग्यता रखने वाली कई होनहार महिलाओं की सेवा से हमें वंचित किया।

आर्थिक क्षेत्र में एडम स्मिथ जैसे विचारको का यह घोर स्वार्थी तर्क है कि जो किसी तरह संसाधनों पर नियंत्रण कर उत्पादन करने लगे, उसे ही सारा लाभ मिलना चाहिए, अंततः असमानता बेरोजगारी के रूप में समाज को लहलुहान करता है। वही मार्क्सवाद, जो पूंजीवाद के विरोधी विचारधारा बनकर आई, केवल मजदूर का ही सब तथा हर प्रकार के निजी स्वामित्व का विरोध, जैसे कोरे विचारों के कारण आज और प्रासंगिक बनकर रह गई है।

राजनीतिक क्षेत्र में हिटलर का नाजीवाद कौन भूल सकता है, जिसने अपने इस कोरे तर्क बहुमत की राय ही देश की राय है, के कारण एक अंधराष्ट्रवाद की ऐसी धारा को जन्म दिया, जिसने उस समय यहूदियों के नरसंहार व द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में विश्व को लहलुहान किया तथा आज भी विश्व के अलग-अलग भाग में कर रही है।

तो अब सवाल यह उठता है कि कोरा तर्कपूर्ण मन खतरनाक है, तो मन को किस प्रकार का होना चाहिए ? इसका सीधा सा जवाब तो 'भावनाएं' हैं, मनुष्य का मन 'भावनात्मक' होना चाहिए। भावनाओं का महत्व हमें निम्न पंक्तियां बताती हैं-

*"वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
निकल कर आंखों से चुपचाप, वही होगी कविता अनजान।"*

भावनाओं का मानव जीवन में तथा समाज के कल्याण में कितना महत्व हो सकता है इसके भी पर्याप्त कारण व उदाहरण हैं। भावनाएं, जहां एक ओर हमें किसी भी परिस्थिति को समग्रता में समझने में मदद करती हैं, जिसके आधार पर हमें तर्कों से परे जाकर भी पूर्ण न्याय कर पाने में आसानी होती है, वहीं दूसरी ओर हमारे भीतर करूंगा वह सहानुभूति जैसे मूल्यों का विकास करती है।

सम्राट अशोक का तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में युद्ध छोड़कर धर्म का मार्ग अपनाना उस कोरे तर्क पर भावना की विजय थी, जो साम्राज्य विस्तार हेतु युद्ध व केवल युद्ध पर बल देकर लाखों निर्दोषों की हत्या करवाता था।

भावनाओं का दूसरा महत्व करुणा व सहानुभूति का सृजन करता है। व्यक्तिगत स्तर पर करुणा व सहानुभूति हमें सड़क पर किसी अंधे व्यक्ति की मदद करने, दिव्यांग व्यक्ति का सम्मान करने योग्य बनाएगी तथा प्रशासनिक स्तर पर यह दिव्या देव राजन जैसे अधिकारी देगी जो नक्सल प्रभावित क्षेत्र के लोगों की समस्या के समाधान हेतु तीन माह में उनकी भाषा सीख लेती है तथा तर्कों का संचालन भावनात्मक रूप से पूर्ण न्याय हेतु करती है।

परंतु यह केवल एक उथला सा जवाब होगा कि आदर्श मन भावनात्मक होना चाहिए। अति भावुकता या केवल भावना संचालित मन, ऐसा व्यक्ति बना देगा जिस चीज समझ में आती है पर चिंतन में तर्कों द्वारा विश्लेषण करना नहीं आता, जैसे कि कवि बैरागी कहते हैं-

*जब चिंतन पर कोई जम जाए
विप्लव की भावार्थ हम जाएं
तो समझो पीढ़ी हार गई,
पुरखा को पछुआ मार गई।*

तो हम फिर उस सवाल पर हैं, एक आदर्श मन कैसा हो ? कोरा तर्क व कोरी भावनाएं दोनों ही खतरनाक हैं। इसका जवाब होगा वह मन जो भावनाओं से प्रेरित तथा बुद्धि से संचालित हो।

आज के वैज्ञानिक व तकनीकी युग में प्री नर्सरी के माध्यम से हम अत्यंत छोटे बच्चों को भी तर्कपूर्ण शिक्षा में झोंक दे रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को मानव का अनुसरण करना था, पर ऐसा लगता है मानव उसका अनुसरण कर भावना रहित व कोरा तर्कपूर्ण होता जा रहा है, जो जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, मनोवैज्ञानिक आदि माध्यमों से समाज को लहलुहान करता जा रहा है।

संपूर्ण चर्चा का सार यही है कि कोरा तर्कपूर्ण मन, मनुष्य के लिए घातक है पर केवल भावनात्मक होना भी खराब है। भावनाओं का इतना मिश्रण आवश्यक है कि तर्कपूर्ण मन, कोरा न रह जाए। वर्तमान में यह समस्या और गहरी होती जा रही है, ऐसे में हमें नयी पीढ़ी को तारा राबसन का यह कथन समझाने की आवश्यकता है -

"जब भावना तक जागरूकता लाई जाती है, तब जिंदगी तक शक्ति लाई जाती है।" □

सरीसृप ऊपरी-असम बेसिन के तेल क्षेत्रों में छिपा रहस्य

✍ नितिन लहकर
अधीक्षण अभियंता (तैलाशय),
केन्द्रीय क्षेत्र, दुलियाजान

अस्वीकरण : यह पूरी तरह से काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, व्यवसाय, स्थान, घटनाएँ और घटनाएँ या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक तरीके से इस्तेमाल की गई हैं।

1 दिसम्बर 1897, असम:

यह भोर की पहली किरण थी।

कर्नल हैवलॉक (पेट्रोलियम भूविज्ञानी) और लेफ्टिनेंट कर्नल वेल्स (पेट्रोलियम इंजीनियर) नेफ्टेजान शहर से एक जीप में सवार होकर निकले, जो असम बेसिन में महारानी की भूवैज्ञानिक सेवाओं के लिए ड्यूटी पर थी। ड्राइवर रामभरोसे ने चौथा गियर लगाया और जीप को 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से “बोलश्या” वन अभ्यारण्य के घने जंगलों से होते हुए उस विशाल गुंबदनुमा भौगोलिक संरचना की ओर बढ़ाया, जिसके पास हाल ही में स्थानीय लोगों ने कई छोटे-छोटे काले तरल फव्वारे निकलते देखे थे।

कोहरा घना था, लेकिन नेपाल के शेरपा रामभरोसे का अनुभव भी उतना ही गहरा था। वह गोरा, छोटा और दुबला-पतला था, उसके चेहरे और हाथों पर झुर्रियाँ थीं। उसकी बूढ़ी लेकिन चुस्त आँखें और कान सुबह के कोहरे में छिपे संभावित हाथी या बाघ की सुबह की आवाजों को नज़रअंदाज़ न करने के लिए सतर्क थे। भारी-भरकम कर्नल हैवलॉक ने घबराहट में एक भूरे रंग के पैकेट से सिगरेट निकाली, जिसे वह हाल ही में स्कॉटलैंड से लाया था और उसे अपने होठों के बीच रख लिया। सुबह की पहली किरणों में उसके घुंघराले भूरे बाल और मूँछें चमक उठीं, जब वह अपनी डबल शर्ट की जेबों से लाइटर ढूँढ़ रहा था। लेफ्टिनेंट कर्नल वेल्स ने अपने लम्बे हाथों को आगे बढ़ाकर अपना लाइटर आगे बढ़ाया और अपने रिपोर्टिंग अधिकारी की सिगरेट जलाने में मदद की। श्री वेल्स एक स्मार्ट, लंबे और एथलेटिक अधिकारी थे, जो साउथेम्प्टन में पैदा हुए थे, कुछ समय तक ब्रिटिश सेना में काम किया और फिर हाल ही में कर्नल हैवलॉक के अधीन असमिया भूमि पर एक महत्वपूर्ण परियोजना पर काम करने के लिए स्थानांतरित हुए, जिसे हाल ही में विस्तारित यंडाबू संधि के माध्यम से ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन लाया गया था।

करीब एक घंटे बाद वे गुंबदनुमा संरचना "गोलाकार" पर पहुँचे। जीप से उतरकर टीम गोलाकार के पास पहुँची। उसी समय तीन ट्रक मौके पर पहुँचे। कर्नल हैवलॉक ने आदेश दिया, "लड़कों, नीचे आओ!" प्रत्येक ट्रक से नीली वर्दी में 12 मजदूरों का एक समूह नीचे उतरा।

मौसम ठंडा था और मजदूर आलस से इधर-उधर घूम रहे थे और एक-दूसरे से पुराने "पान" के पत्तों में लिपटे सुपारी के गोलों की मांग कर रहे थे। क्रोधित होकर, श्री वेल्स ने अपने होठों पर एक बड़ी काली सीटी लगाई और जोर से सीटी बजाई। फिर उन्होंने अपनी जेब से 9 मिमी की पिस्तौल निकाली और हवा में एक राउंड फायर कर दिया। सभी उम्र के "लड़कों" ने तुरंत अपनी-अपनी पोजीशन ले ली और ड्रिलिंग शुरू कर दी। "खुदाई करो, लड़को, खुदाई करो!" श्री वेल्स ने पूरी ताकत से चिल्लाया।

श्री वेल्स के प्रकोप के तहत मजदूर दिन भर खुदाई करते रहे। एक छोटे से लंच ब्रेक के दौरान “अजय राजबंशी” ने श्रमिकों को चावल, दाल, तले हुए आलू और करेला परोसा।

शाम का समय था। एक मजदूर ने अजीब सी फुफकार की आवाज सुनी। अंधेरा होने लगा था, इसलिए दृष्टि सामान्य रूप से सीमित थी और चीजें थोड़ी धुंधली होने लगी थीं। चूहे या कोई छोटा-मोटा जंगली जानवर समझकर मजदूर ने कुदाल उठाई; दो बांसों के बीच के अंधेरे से जहर की एक किरण जोर से निकली और मजदूर के चेहरे पर गिरी; तेज चीख के साथ वह नीचे गिरा, कुछ देर छटपटायी और फिर मर गया।

सभी उसके शव के पास पहुंचे और उसका निरीक्षण किया। जहर के कारण उसका चेहरा जल गया था। सभी डर गए। तभी मिस्टर वेल्स ने एक नए खोदे गए गड्ढे की झाड़ियों के पीछे से हलचल सुनी। उन्होंने निशाना साधा और झाड़ियों पर गोली चला दी। झाड़ियों से एक विशालकाय 40 फीट लंबा एनाकोंडा निकला और अपना जबड़ा चौड़ा करके भीड़ की ओर बढ़ा। आम तौर पर एनाकोंडा सांपों में जहर नहीं होता। लेकिन कोयला-टार गड्ढों और भूमिगत कच्चे तेल के भण्डारों में रहने के कारण यह उत्परिवर्तित सरीसृप स्पष्टतः एक विचित्र विषैले राक्षस के रूप में विकसित हो गया था।

"शेरपा, उस पर हमला करो!" श्री वेल्स ने आदेश दिया। शेरपा ने अपने बड़े खुकरी के साथ एनाकोंडा पर हमला किया। उसने खुकरी को साँप के गले में घोंपने की कोशिश की। लेकिन उसका प्रयास बेकार गया। साँप ने गुर्राहट के साथ रामभरोसे को निगल लिया और बाद में पचाने के लिए अपने पेट में रख लिया। इस बीच श्री हैवलॉक जीप से अपनी

राइफल लेकर आए और एनाकोंडा पर निशाना साधा। सांप ने उस पर हमला कर दिया; कर्नल हैवलॉक ने आखिरी क्षण में खुद को बचा लिया, लेकिन वह घायल हो गए। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए कर्नल हैवलॉक चिल्लाया, "सब लोग भागो !!!" हर कोई अपने-अपने परिवहन के साधनों में घटना स्थल से भाग गया।

2 दिसंबर 1897

श्री वेल्स ने घायल कर्नल हैवलॉक के निर्देशानुसार दिल्ली कार्यालय में युद्ध विभाग के सचिव को एक टेलीग्राम भेजा, जिसमें असम के रहस्यमयी एंटीक्लिनल आउटक्रॉप में पाए गए राक्षसी सरीसृप का मुकाबला करने के लिए उपयुक्त एंटी-वेनम गोलियों और पर्याप्त तोपखाने के साथ एक विशेष टीम की मांग की गई थी।

एक हफ्ते बाद जनरल ए. डायर और उनके 90 सैनिकों की बड़ी टीम राइफलों और विशेष गोलियों के साथ नेप्रेतेजान, असम पहुंची। जनरल डायर, कर्नल हैवलॉक और लेफ्टिनेंट कर्नल वेल्स रात-रात भर साथ बैठे रहे, ताकि इस बात पर चर्चा की जा सके कि सांप का जल्द से जल्द सामना कैसे किया जाए।

10 दिसम्बर 1897

दिसंबर 1897 की सुबह मिस्टर डायर, मिस्टर हैवलॉक और मिस्टर वेल्स अपनी जीप (जिसे अब शेरपा का बेटा कांचा चला रहा था) में सवार होकर निकल पड़े। उनके पीछे जनरल डायर की टीम पूरी वर्दी और हथियारों के साथ 6 ट्रकों में चल रही थी।

वे 'गोलाकार' की जगह पर पहुंचे। तीनों अधिकारी (और कांचा) और 90 सैनिक वाहनों से उतर गए। सैनिकों ने तुरंत ही सांप से निपटने के लिए एक सैन्य अर्ध-वृत्ताकार पैटर्न बनाया और अपनी राइफलें लोड कीं।

श्री वेल्स के निर्देश पर कांचा ने एक लकड़ी के डंडे (जिसे पहले कार्बनिक मेंढक पदार्थ से बने एक विशेष रासायनिक सूत्र में डुबोया जाता था, जिसका उपयोग सांपों को आकर्षित करने के लिए किया जाता है) के चारों ओर एक खास कपड़ा लपेटा। कांचा ने एक अनोखी ऊंची आवाज में चीख मारी और कपड़े से लिपटे डंडे को कुछ देर तक हवा में लहराया। फिर, 15 मिनट तक सन्नाटा रहा। फिर सभी ने पत्तों की सरसराहट सुनी और एक भयानक बदबू महसूस की। एनाकोंडा बाहर आया और अपने जबड़े फैलाए। फिर एनाकोंडा भीड़ की ओर बढ़ा।

जनरल डायर पहले तो चौंक गए और वहीं स्तब्ध रह गए। कर्नल हैवलॉक ने उन्हें जोर से हिलाया और उन्हें वास्तविक स्थिति में वापस लाया। जनरल डायर ने आदेश दिया "परेड, ओपन फायर!!!"

90 सैनिकों ने सांप पर गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं। सांप ने जवाबी हमला किया और एक सैनिक को मार डाला, लेकिन लगभग दस मिनट तक गोलियाँ चलती रहीं। लगभग 1500 राउंड गोलियाँ चलाई जा चुकी थीं। सांप नीचे गिर गया और ढह गया। मिस्टर वेल्स और कांचा धीरे-धीरे लेटे हुए राक्षस के पास पहुंचे और उसकी मौत की पुष्टि की। खतरनाक सरीसृप का खतरा खत्म हो गया था।

जनवरी 1899:

लंदन से बड़ी-बड़ी ड्रिलिंग मशीनें आ चुकी थीं। कर्नल हैवलॉक के नेतृत्व में 'गोलाकार' के एक कुएं में जमीन से 1000 फीट नीचे तेल मिला।

इस बार असम में खतरा टल गया।

लेकिन सभी को पता नहीं था कि रूस के पश्चिमी साइबेरिया के एक तेल क्षेत्र में एक बड़ा खतरा छिपा हुआ है... जो जल्द ही सामने आने वाला है... □

‘नई महिला’: मिथक या वास्तविकता

✍ राजेश चट्टोपाध्याय

कार्यालय सहायक-II

अनुबंध एवं क्रय अनुभाग, कोलकाता कार्यालय

“जब हममें से आधे लोगों को पीछे रखा जाता है तो हम सभी सफल नहीं हो सकते।”

— मलाला यूसुफजई

हर साल हम 8 मार्च को महिला दिवस मनाते हैं जिसका मकसद महिलाओं का सम्मान करना, उन्हें सशक्त बनाना और उनका समर्थन करना तथा उन्हें अपने जीवन में आगे आने के लिए प्रेरित करना है। महिलाएं शक्ति, ताकत और कभी हार न मानने वाले रवैये की प्रतीक हैं। भारत में 'नई महिला' के विचार का पता औपनिवेशिक काल के अंत में लगाया जा सकता है जब महिलाओं की स्थिति में सुधार के उद्देश्य

से सामाजिक सुधार आंदोलनों ने गति पकड़ी। राजा राम मोहन राय और ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे सुधारकों ने महिला शिक्षा, सती प्रथा और विधवा पुनर्विवाह जैसी प्रथाओं के उन्मूलन की वकालत की। स्वतंत्रता आंदोलन ने सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी को और अधिक उत्प्रेरित किया, जिसमें सरोजिनी नायडू और कस्तूरबा गांधी जैसी हस्तियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता के बाद,

भारतीय संविधान ने सभी नागरिकों के लिए समानता सुनिश्चित की, जिसने महिलाओं के अधिकारों की नींव रखी।

हम यह भी जानते हैं कि विकास के लिए महिलाओं के सशक्तिकरण से ज्यादा प्रभावी कोई साधन नहीं है। महिला सशक्तिकरण समय की जरूरत बन गया है। यह वैश्विक चिंता का विषय बन गया है। हालांकि यह जानना दुखद है कि भारतीय संविधान द्वारा पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता बनाए रखने की गारंटी के बाद भी, जिस दुनिया में हम रहते हैं, वहां व्यावहारिक स्थिति कम ही दिखती है। महिला विकास और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं और पहल की जाती हैं। फिर भी यह स्पष्ट है कि कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी सबसे कम है। सार्वजनिक स्थानों पर महिला सुरक्षा और संरक्षण, महिला शिक्षा के प्रति सम्मान और समाज में महिलाओं और पुरुषों के प्रति समान दृष्टिकोण अभी भी संदिग्ध है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाओं ने राष्ट्र निर्माण में योगदान दिया है। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई अन्य कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। महिलाओं के प्रति असमानता को खत्म करने के प्रयासों को कड़ा प्रतिरोध झेलना पड़ा है।

नई महिला अवधारणा एक मिथक बन सकती है यदि यह पूरी तरह से सरकारी पहलों, योजनाओं आदि पर निर्भर करती है। यह तभी संभव है जब महिलाएं अपना मन बदलें, अपने अधिकारों के लिए खड़ी हों और खुद पर विश्वास करना शुरू करें कि उनके पास समान अधिकार और अवसर हैं। चाहे वह व्यक्तिगत हो, सामाजिक हो या आर्थिक, नई महिला का अपने जीवन पर नियंत्रण है। यह अवधारणा लैंगिक मानदंडों में बदलाव और लैंगिक समानता और भेदभाव के बारे में जागरूकता को इंगित करती है। नई महिलाएं आर्थिक अवसरों तक समान पहुंच, निर्णय लेने में संतुलन और उद्देश्य, रचनात्मकता और करुणा के साथ शक्ति लाने की रूपरेखा का संकेत देती हैं। ऐसी संस्कृतियाँ और पुराने लोग हैं जो अभी भी मानते हैं कि लड़कियाँ और महिलाएँ पुरुषों से कमतर हैं और उन्हें कम शिक्षित होना चाहिए, घर में ज्यादा रहना चाहिए और उन्हें काम करने से वंचित रखा जाना चाहिए।

अपने विचारों और दिमाग को व्यापक बनाने और वास्तविकता को खोजने के लिए अपने क्षेत्र से बाहर निकलना महिलाओं के हाथ में है।

राष्ट्र निर्माण की दिशा में महिलाओं को सशक्त बनाना चर्चा का एक बड़ा विषय है। हमारे प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदीजी का मानना है कि महिलाओं के सशक्तिकरण की कुंजी बालिकाओं को शिक्षित करना है। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण भारत के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महिलाओं को गृहिणी के रूप

में देखने के दिन चले गए हैं, हमें महिलाओं को राष्ट्र निर्माता के रूप में देखना होगा। हमारे भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के बारे में लिखना सार्थक है जिन्होंने महिला सशक्तिकरण में योगदान दिया है।

हाल ही में "महिला पहले, सभी के लिए समृद्धि" की थीम पर जोर दिया गया है कि विकासशील और विकसित देशों में आर्थिक विकास और समृद्धि के लिए महिलाएं जबरदस्त शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं, महिलाओं के लिए समान वेतन और काम करने की स्थिति में सुधार सुनिश्चित करती हैं। हर लड़की और महिला में इस दुनिया को बेहतर बनाने के लिए बदलाव करने की क्षमता है और यह क्षमता गहरी सोच और उच्च विचारों पर निर्भर करती है। नई महिलाओं का निर्माण तभी संभव है जब महिलाएं अपने फैसले खुद लेने के लिए सशक्त होने का फैसला करें, सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जाएं और खुद पर विश्वास करें कि वे पुरुषों के समान ही सक्षम हैं और बेहतरी के लिए चारों ओर बदलाव लाएं। तभी नई महिला अवधारणा पारंपरिक कहानी या मिथक की अवधारणा से बाहर आती है।

'नई महिला' शब्द 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में उभरा, जो समाज में महिलाओं की भूमिका और पहचान में बदलाव का प्रतीक है। यह उन महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है जो पारंपरिक भूमिकाओं से अलग हो रही थीं, शिक्षा प्राप्त कर रही थीं, कार्यबल में प्रवेश कर रही थीं और समान अधिकारों की मांग कर रही थीं। भारत में, इस अवधारणा ने सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होकर अद्वितीय आयाम ग्रहण किए हैं। जबकि लैंगिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, 'नई महिला' के आदर्श की पूर्ति मायावी बनी हुई है, जो लगातार मिथकों और वास्तविकताओं में उलझी हुई है जो प्रगति और प्रतिगमन के जटिल परिदृश्य को प्रकट करती है।

इन प्रगतियों के बावजूद, पारंपरिक पितृसत्तात्मक मानदंड भारतीय समाज पर हावी रहे। 'नई महिला' का विचार गहरी जड़ें जमाए सांस्कृतिक अपेक्षाओं से टकराया, जिससे आधुनिकता और परंपरा के बीच एक जटिल अंतर्संबंध पैदा हुआ।

शिक्षा महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। हाल के दशकों में, भारत ने महिला साक्षरता दर में सुधार करने में उल्लेखनीय प्रगति की है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) के अनुसार, भारत में महिला साक्षरता दर 2001 में 53.7% से बढ़कर 2011 में 70.3% हो गई। हालांकि, ये आँकड़े महत्वपूर्ण क्षेत्रीय असमानताओं और शिक्षा की गुणवत्ता को



छिपाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र, विशेष रूप से बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में, अभी भी पिछड़े हुए हैं, और लड़कियाँ अक्सर गरीबी, कम उम्र में शादी या घरेलू जिम्मेदारियों के कारण स्कूल छोड़ देती हैं।

महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों में भी विस्तार हुआ है, और अधिक महिलाएँ इंजीनियरिंग, चिकित्सा और व्यवसाय जैसे विविध क्षेत्रों में प्रवेश कर रही हैं। हालांकि, आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) के अनुसार, 2019-2020 में कुल महिला श्रम बल भागीदारी दर कम बनी हुई है, जो 20.3% के आसपास मँडरा रही है। सांस्कृतिक अपेक्षाएँ, सुरक्षित कार्य वातावरण की कमी और चाइल्डकैरर सुविधाओं जैसी अपर्याप्त सहायता प्रणालियाँ इस असमानता में योगदान करती हैं। काम करने वाली कई महिलाएँ अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत हैं, जहाँ उन्हें शोषण, कम वेतन और नौकरी की असुरक्षा का सामना करना पड़ता है।

राजनीतिक भागीदारी 'नई महिला' आदर्श का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। भारत में महिलाओं को प्रमुख राजनीतिक पदों पर पहुँचते देखा गया है, जिसमें पहली महिला प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी और पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल जैसी हस्तियों ने महत्वपूर्ण बाधाओं को तोड़ा है। इसके अतिरिक्त, 73वें और 74वें संवैधानिक संशोधनों ने स्थानीय सरकारी निकायों में महिलाओं के लिए एक तिहाई आरक्षण अनिवार्य कर दिया, जिससे जमीनी स्तर पर उनकी राजनीतिक भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

हालाँकि, सरकार के उच्च स्तरों पर प्रतिनिधित्व अपर्याप्त बना हुआ है। 2020 तक संसद के निचले सदन, लोकसभा में महिलाओं के पास केवल 14% सीटें हैं। राजनीतिक दल अक्सर महिला उम्मीदवारों को मैदान में उतारने में हिचकिचाते हैं, और जो चुनाव लड़ते हैं, उन्हें हिंसा, भेदभाव और वित्तीय सहायता की कमी सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, जो महिलाएँ राजनीतिक सत्ता हासिल करती हैं, वे अक्सर प्रभावशाली परिवारों से होती हैं, जो उनके उत्थान में वंशवादी राजनीति की भूमिका को उजागर करती हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंड 'नई महिला' के आदर्श की पूर्ति में प्रमुख बाधाएँ बने हुए हैं। पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ और अपेक्षाएँ अभी भी महिलाओं के जीवन के कई पहलुओं को निर्धारित करती हैं, घरेलू कर्तव्यों से लेकर करियर विकल्पों तक। पितृसत्ता के व्यापक प्रभाव का मतलब है कि महिलाओं को अक्सर व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच एक नाजुक संतुलन बनाना पड़ता है।

विवाह और मातृत्व को अभी भी महिलाओं के लिए प्राथमिक भूमिकाएँ माना जाता है, इन भूमिकाओं के अनुरूप होने के लिए सामाजिक दबाव बहुत अधिक है। सम्मान और पारिवारिक प्रतिष्ठा की अवधारणा अक्सर महिलाओं के व्यवहार को निर्धारित करती है, जिससे उनकी गतिशीलता और विकल्पों पर प्रतिबंध लग जाते हैं। दहेज जैसी प्रथाएँ,

हालाँकि अवैध हैं, देश के कई हिस्सों में जारी हैं, जिससे महिलाओं और उनके परिवारों पर वित्तीय और भावनात्मक बोझ पड़ता है।

मीडिया और लोकप्रिय संस्कृति भी पारंपरिक लिंग मानदंडों को मजबूत करने में भूमिका निभाती है। जबकि मजबूत, स्वतंत्र महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ रहा है, ये अक्सर रूढ़िवादी चित्रण के साथ सह-अस्तित्व में हैं जो स्त्रीत्व और समाज में महिलाओं की भूमिकाओं की पुरानी धारणाओं को मजबूत करते हैं।

महिलाओं के खिलाफ हिंसा एक गंभीर मुद्दा है जो 'नई महिला' आदर्श की दिशा में प्रगति को कमजोर करता है। भारत में यौन उत्पीड़न, घरेलू हिंसा और लिंग आधारित हिंसा के अन्य रूपों के रिपोर्ट किए गए मामलों में वृद्धि देखी गई है।

इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए अकेले कानून पर्याप्त नहीं हैं। कार्यान्वयन अक्सर ढीला होता है, और हिंसा के पीड़ितों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण अक्सर असहयोगी होता है। पीड़ित को दोषी ठहराना और कलंक महिलाओं को अपराध की रिपोर्ट करने से रोक सकता है, जबकि कानूनी प्रक्रिया लंबी और कठिन हो सकती है, जिससे सजा की दर कम होती है। महिलाओं के लिए सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए न केवल कानूनी सुधारों की आवश्यकता है, बल्कि लिंग और हिंसा के प्रति गहरे बैठे दृष्टिकोण को चुनौती देने और बदलने के लिए सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन की भी आवश्यकता है।

महिलाओं के सशक्तिकरण और 'नई महिला' के आदर्श को साकार करने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है। जो महिलाएँ अपनी आय स्वयं कमाती हैं, वे अपने परिवारों और समुदायों के भीतर अधिक स्वायत्तता और निर्णय लेने की शक्ति प्राप्त कर सकती हैं।

हालाँकि, लिंग वेतन अंतर एक सतत मुद्दा है, जिसमें महिलाएँ समान कार्य के लिए पुरुषों की तुलना में काफी कम कमाती हैं। महिलाओं को उच्च-भुगतान वाले, नेतृत्व वाले पदों पर भी कम प्रतिनिधित्व मिलता है, अक्सर एक ऐसी कांच की छत का सामना करना पड़ता है जो उनके करियर की उन्नति को सीमित करती है।

औपचारिक रोजगार के अलावा, उद्यमिता महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक बढ़ता हुआ रास्ता है। स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) आंदोलन और स्टैंड-अप इंडिया तथा मुद्रा योजना जैसी सरकारी योजनाओं का उद्देश्य महिला उद्यमियों को सहायता प्रदान करना है। हालाँकि, ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए ऋण, प्रशिक्षण और बाजारों तक पहुंच सीमित है।

स्वास्थ्य और खुशहाली 'नई महिला' के आदर्श को पूरा करने के लिए मौलिक हैं। भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है, मातृ मृत्यु दर में कमी आई है और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बढ़ी है। हालाँकि, महत्वपूर्ण चुनौतियां बनी हुई हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां स्वास्थ्य

सेवा का बुनियादी ढांचा अपर्याप्त है।

प्रजनन स्वास्थ्य चिंता का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। गर्भनिरोधक और गर्भपात तक कानूनी पहुंच के बावजूद, कई महिलाओं के पास अपने प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में सूचित विकल्प बनाने के लिए आवश्यक जानकारी और सेवाओं का अभाव है। महिलाओं की कामुकता और प्रजनन अधिकारों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण अक्सर कलंक और भेदभाव को जन्म देते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य महिलाओं के कल्याण का एक और महत्वपूर्ण लेकिन अक्सर उपेक्षित पहलू है। कई भूमिकाओं को संतुलित करने, भेदभाव से निपटने और हिंसा का सामना करने का दबाव महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर भारी पड़ता है। मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच सीमित है, और मानसिक बीमारी से जुड़ा कलंक इस मुद्दे को और जटिल बनाता है।

भारत में महिलाओं के अनुभव एक समान नहीं हैं। अंतर्संबंध, यह विचार कि जाति, वर्ग और लिंग जैसे सामाजिक स्तरीकरण के विभिन्न रूप एक दूसरे को प्रतिच्छेद करते हैं, महिलाओं के जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जाति, धर्म, जातीयता और सामाजिक-आर्थिक स्थिति सभी इस बात को प्रभावित करते हैं कि महिलाएँ किस हद तक 'नई महिला' के आदर्श को प्राप्त कर सकती हैं।

उदाहरण के लिए, दलित महिलाओं को अपनी जाति और लिंग के कारण जटिल भेदभाव का सामना करना पड़ता है, उन्हें उच्च स्तर की

हिंसा और आर्थिक शोषण का सामना करना पड़ता है। अल्पसंख्यक धार्मिक समुदायों की महिलाओं को भी अपनी पहचान से संबंधित विशिष्ट चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। शहरी और ग्रामीण महिलाओं के अनुभव काफी भिन्न हैं, ग्रामीण महिलाओं को अक्सर शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवा में अधिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

भारत में 'नई महिला' के आदर्श की पूर्ति एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा बना हुआ है। जबकि शिक्षा, राजनीतिक भागीदारी और कानूनी अधिकारों जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, गहरी सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बाधाएँ वास्तविक लैंगिक समानता में बाधा डालती रहती हैं। 'नई महिला' की अवधारणा को साकार करने के लिए कई आयामों, नीति, सामाजिक दृष्टिकोण और व्यक्तिगत सशक्तिकरण में निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

इस आदर्श को प्राप्त करने में संरचनात्मक असमानताओं को संबोधित करना शामिल है जो महिलाओं के अवसरों और स्वायत्तता को सीमित करती हैं। इसके लिए पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देने और बदलने, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच में सुधार करने, सुरक्षा सुनिश्चित करने और आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए एक ठोस प्रयास की आवश्यकता है। केवल एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण के माध्यम से ही भारत में 'नई महिला' वास्तव में फल-फूल सकती है।

एक अच्छा जीवन वह है जो प्रेम से अभिप्रेरित हो और ज्ञान से निर्देशित हो

✍ संदीप चक्रवर्ती

प्रबंधक-संविदा

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

"आप सिर्फ एक बार जीते हैं, लेकिन अगर आप इसे सही तरीके से करते हैं, तो एक बार ही काफी है।"

- में वेस्ट

जीवन का सार एक गहरी और जटिल विषयवस्तु है, जो मानवता के अस्तित्व का मूल है। एक अच्छा जीवन, जो प्रेम और ज्ञान से भरा हो, वास्तव में उस पूर्णता की ओर ले जाता है जिसका हम सभी पीछा करते हैं। इस निबंध में, हम समझेंगे कि प्रेम और ज्ञान कैसे एक दूसरे के पूरक हैं और किस प्रकार ये हमें एक संतोषजनक जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रेम: जीवन की धारा

प्रेम, एक अनंत शक्ति है जो न केवल व्यक्तियों को जोड़ता है, बल्कि समाज को भी एकजुट करता है। महात्मा गांधी ने कहा था, "प्रेम दुनिया

का सबसे शक्तिशाली बल है।" यह एक ऐसी आवना है जो हमें एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति, सहिष्णुता और समर्पण का अनुभव कराती है। प्रेम केवल एक व्यक्तिगत अनुभव नहीं है, यह समाज के लिए एक आधार भी है।

जब हम प्रेम की बात करते हैं तो यह केवल रोमांटिक प्रेम तक सीमित नहीं होता। यह मातृ प्रेम, मित्रता और मानवता के प्रति करुणा का भी प्रतीक है। उदाहरण के लिए, मदर टेरेसा ने अपना जीवन दूसरों की सेवा में व्यतीत किया। यह दर्शाते हुए कि प्रेम से प्रेरित कार्यों का समाज पर कितना गहरा प्रभाव पड़ सकता है। उनके द्वारा की गई सेवाएँ, चाहे वो

गरीबों की हो या बीमारों की, प्रेम की सच्ची परिभाषा प्रस्तुत करती हैं।

ज्ञान: मार्गदर्शक प्रकाश

ज्ञान, एक शक्ति है जो हमें सही और गलत के बीच भेद करने की क्षमता देती है। अल्बर्ट आइंस्टाइन ने कहा था, "ज्ञान अनुभव से आता है और अनुभव सबसे अच्छे शिक्षक है।" यह केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह अनुभवों, शिक्षाओं और सोचने की क्षमता का परिणाम है। ज्ञान हमें एक विस्तृत दृष्टिकोण प्रदान करता है और हमें जीवन की जटिलताओं को समझने में मदद करता है।

जब ज्ञान को प्रेम के साथ जोड़ा जाता है, तो यह हमें सही निर्णय लेने में सहायक होता है। जब हम किसी को प्यार करते हैं, तो हमें यह भी समझना होगा कि उनके प्रति हमारे कार्यों का क्या प्रभाव पड़ेगा। जैसे कि एक शिक्षक जो अपने छात्रों से प्रेम करता है, उन्हें ज्ञान देने में अपना सर्वस्व लगा देता है। ऐसे शिक्षक, जैसे कि स्टीव जॉब्स, जिन्होंने अपने कार्यों के माध्यम से जान और नवाचार का संचार किया, समाज में परिवर्तन लाने में सफल रहे।

प्रेम और ज्ञान का संगम

जब प्रेम और ज्ञान का मिलन होता है, तो एक ऐसा जीवन बनता है जो स्थायी और संतोषजनक होला है। प्रेम से अभिप्रेरित और ज्ञान से निर्देशित जीवन न केवल हमें व्यक्तिगत संतोष प्रदान करता है, बल्कि यह समाज के लिए भी एक सकारात्मक योगदान देता है।

एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना कीजिए, जो अपने परिवार और दोस्तों के प्रति प्रेमी है, लेकिन साथ ही वह शिक्षित भी है। वह अपने प्रेम को ज्ञान के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। वह जानता है कि कैसे अपने रिश्तों को मजबूत बनाना है, कैसे संवाद करना है, और कैसे संघर्षों का समाधान करना है। जैसे कि डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, जिन्होंने ज्ञान और प्रेम को अपने जीवन में सर्वोच्च स्थान दिया, न केवल अपने लिए, बल्कि देश के लिए भी प्रेरणा बने।

समाज में प्रेम और ज्ञान का योगदान

प्रेम और ज्ञान का समाज में गहरा प्रभाव होता है। जब एक समाज प्रेम से भरा होता है, तो उसमें सामंजस्य, सहयोग और सहिष्णुता का वातावरण होता है। नेल्सन मंडेला ने कहा था, "शांति का मार्ग प्रेम और सहिष्णुता से गुजरता है।" ऐसे समाज में लोग एक-दूसरे के प्रति सम्मानित होते हैं और सभी की भलाई के लिए काम करते हैं।



दूसरी ओर, ज्ञान समाज को जागरूक करता है। एक शिक्षित समाज ही वास्तविकता को समझ सकता है और समस्याओं का समाधान खोज सकता है। ज्ञान हमें न केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करता है, बल्कि यह हमें हमारे कर्तव्यों के प्रति भी सजग रखता है।

वास्तविक जीवन के उदाहरण

आधुनिक युग में, प्रेम और ज्ञान के उदाहरण हर जगह मौजूद हैं। मलाला

यूसुफजई, जिन्होंने शिक्षा के अधिकार के लिए संघर्ष किया, हमें यह सिखाते हैं कि ज्ञान की शक्ति और प्रेम का संचार कैसे एक व्यक्ति को समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित कर सकता है। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि जब हम ज्ञान के प्रति जागरूक होते हैं और प्रेम से प्रेरित होते हैं, तो हम किसी भी कठिनाई का सामना कर सकते हैं।

इसके अलावा, भारतीय समाज में कई ऐसे उदाहरण हैं जहां प्रेम और ज्ञान ने एक साथ मिलकर लोगों के जीवन को बदल दिया है। जैसे कि स्वामी विवेकानंद ने प्रेम और ज्ञान को एकत्रित करते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। उनके विचारों ने लाखों लोगों को जागरूक किया और उन्होंने समाज में एक नई सोच का संचार किया।

निष्कर्ष

अंत में, यह कहना अत्यंत आवश्यक है कि एक अच्छा जीवन वह है जो प्रेम से अभिप्रेरित और ज्ञान से निर्देशित हो। प्रेम हमें जोड़ता है, जबकि ज्ञान हमें सही रास्ता दिखाता है। जब हम इन दोनों का समन्वय करते हैं, तो हम अपने जीवन को न केवल सार्थक बनाते हैं, बल्कि समाज में भी एक सकारात्मक बदलाव लाते हैं।

हम सभी को अपने जीवन में प्रेम और ज्ञान को महत्व देना चाहिए। यह न केवल हमारे व्यक्तिगत विकास में सहायक होगा, बल्कि एक बेहतर और सुखद समाज के निर्माण में भी योगदान देगा। इसलिए, हमें इस दिशा में प्रयासरत रहना चाहिए कि हमारा जीवन प्रेम और ज्ञान से भरा हो, जिससे हम न केवल अपने लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए एक प्रेरणा बन सकें।

इस प्रकार, प्रेम और ज्ञान का संयोग हमें एक समृद्ध और संतोषजनक जीवन की ओर ले जाता है, जिससे हम न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि समाज के उत्थान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। □

आत्म दीपो भवः

ससिन्द्र शर्मा

अध्यापक

ऑयल इंडिया हायर सेकेंडरी स्कूल, दुलियाजान

भारत ऋषि मुनियों का देश है। ईश्वर के अवतार के रूप में राम, कृष्ण के आविर्भाव, बुद्धदेव, शंकरदेव जैसे ईश्वरीय गुण सम्पन्न महात्मा की जन्मभूमि हमारा देश भारत है। अशोक, युधिष्ठिर जैसे धार्मिक शासक, चाणक्य जैसे महामंत्री, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, परशुराम जैसे गुरु, असाधारण व्यक्ति सम्पन्न पितामह भीष्म, अर्जुन जैसे वीर धनुर्धर, कर्ण जैसे दानवीर, न्याय के प्रतीक महात्मा गांधी जैसे महात्मा, स्वामी विवेकानन्द जैसे ज्ञानी पुरुष की जन्मभूमि है हमारा देश भारत वेदि उपनिषद के जनक हमारा देश तीर्थभूमि, देवलोक की भूमि के रूप में आज भी विश्व में सुशोभित हो रहा है। इसलिए कहा जाता है 'धन्य धन्य भारतभूमि। महात्माओं के नीति-आदर्श से हमारा देश प्रगति के पथ पर अग्रसर है। महान ऋषि-मुनियों की वाणियां आम जनताओं की जीवन यात्रा में प्रेरणा के प्रतीक के रूप मार्गदर्शन कर रही हैं।

सीता माता के उद्धार के पश्चात जब श्रीरामचंद्र लंका से वापस आने की तैयारी की थी तब भ्राता लक्ष्मण वहां कुछ दिनों के लिये ठहरने की इच्छा प्रकट की थी। स्वर्णमय लंका के नैसर्गिक सौन्दर्य से लक्ष्मण अत्यंत मुग्ध हो गया था। इसलिए वहां की सुन्दरता से एकात्म होकर उपभोग करने के लिए और कुछ दिन लंका में ठहरने की इच्छा राम के आगे व्यक्त की थी। तब स्वर्णमय लंका के सौन्दर्य से मोहित लक्ष्मण को सम्बोधित करते हुए श्रीराम ने कहा था " स्वर्गादपि गरीयसी"। अर्थात् मातृ और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से भी आगे है। इस कथन के माध्यम से श्रीराम ने लक्ष्मण से कहना चाहा था कि लंका के नैसर्गिक रूप भले ही नयनाभिराम हो अपनी मातृभूमि की तुलना किसी से नहीं की जा सकती है। अपनी जन्मभूमि के प्रति एकात्म होना, मातृभूमि की सेवा करना ही प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है। श्रीराम के मुंह से निकली 'स्वर्गादपि गरीयसी' वाणी आज भी लोगों के मन में देशप्रेम की भावना जागृत करने के लिए दोहरायी जाती है।

"सत्यमेव जयते" मण्डक उपनिषद में वर्णित एक महान वाणी है। "सत्यमेव जयते" अर्थात् सत्य की हमेशा जीत होती है। समाज में सत्य की प्रतिष्ठा करने के लिए विद्वान, शिक्षा सुधारक, भारतीय जातीय कांग्रेस के सभापति मदन मोहन मालव्य

ने उपनिषद की यह वाणी प्रचार की थी। समाज से अनीति, अन्याय, हिंसा आदि कुभावनाओं के बोलबाला को मिटाकर सत्य की ध्वजा फहराने के लिए देश के राष्ट्रीय प्रतीक के नीचे यह अमर वाणी अंकित की गयी है। उस प्रकार समाज से हिंसा का दावानल को मिटाने के लिए भगवद्गीता की अमर वाणी "अहिंसा परम धर्म दोहरायी जाती है। अहिंसा की शक्ति अपार है। अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी ने अहिंसा रूपी अस्त्र के सहारे देश को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अहिंसा नीति की शक्ति कितनी है विश्व के लोग महात्मा गांधी, भारत से ही सीखें

अतिथि, मेहमान, अभ्यागत को हमारे देश में भगवान के रूप में माना जाता है। इसलिए "अतिथि देवो भवः वाणी भारतीयों के रोम रोम में बसी हुई है। अतिथि देवो भव" जिसका अर्थ है 'अतिथि भगवान है, यह वाक्यांश तैत्तिरीयोपनिषद से लिया गया है। इतिहास गवाह है कि हमारा देश अतिथि का सत्कार करने में सदा तत्पर रहता है। दीन सुदामा सहायता मांगते हुए बालसखा कृष्ण से मिलने द्वारका आये थे। कृष्ण ने बालसखा सुदामा की दयनीय स्थिति देखकर खूब रोए और स्वागत करते हुए खुद सुदामा के पांव धोये दिये थे। मेहमान का आदर, सत्कार करना प्रत्येक भारतीय अपना धर्म मानता है।

इसलिए "अतिथि देवो भव" वाणी पर सभी आस्था रखते हैं।

अतीत में हमारे देश में शिष्यों को आश्रम में शिक्षा दी जाती थी। ऋषि मुनियों ने अपने शिष्यों से शिक्षा प्रदान करते हुए नैतिक शिक्षा पर अधिक बल देते थे। अपने शिष्यों से सम्बोधित करते हुए बुद्धदेव ने कहा था "आत्म दीपो भवः आत्म दीपो भवः अर्थात् आत्मज्ञान की ज्योति से आलोकित होकर जिन्दगी की राह में आगे बढ़ो।" आपके बिना हमें जीवन में मोक्ष का ज्ञान कौन देगा? जीवन में आगे बढ़ने साथ कौन देगा?" बुद्धदेव के जीवन के अंतिम समय में पास खड़े होकर बुद्ध के प्रिय शिष्य आनन्द ने यह प्रश्न किया था। प्रिय शिष्य आनन्द के इस



प्रश्न का उत्तर देते हुए बुद्धदेव ने कहा था- "आत्म दीपो भवः । बुद्धदेव के कहने का मतलब है कि आत्म शक्ति पर भरोसा रखकर स्वज्ञान की ज्योति से जीवन के पथ पर अग्रसर हो। परनिर्भरशील मत बनो। स्वज्ञान से उचित-अनुचित का विचार करके सिद्धांत लो और आगे बढ़ो। कोई किसी का सदा के लिए पथ प्रदर्शक नहीं बन सकता। इसलिए आत्मज्ञान की ज्योति से अपने आप से प्रेरित होकर सत्य के संधान में अग्रसर हो। जो आत्म ज्ञान से परिचित होगा वही दूसरों की सहायता के बिना जीवन के लक्ष्य को हासिल करने में कामयाब हो सकता है। बुद्धदेव की इस वाणी से प्रेरित होकर उनके शिष्यों ने स्वज्ञान की ज्योति से जीवन के पथ को आलोकित करके अपने अपने कर्तव्य पथ पर कदम रखा था। जीवन के अंतिम समय में अपने शिष्यों से कही गयी बुद्धदेव की इस अमरवाणी की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

"आत्म दीपो भवः" बुद्धदेव की इस वाणी से अवश्य एक प्रश्न खड़ा होता है कि अगर जीवन में अपने आप से प्रेरित होकर स्वज्ञान की ज्योति से आगे बढ़ना है तो समाज में गुरु की आवश्यकता ही कहा? आत्मज्ञान की ज्योति से आगे बढ़ना है तो "गुरु ब्रह्म, गुरु विष्णु, गुरु महेश्वर" वाणी असार प्रतीत हो जायेगा। दरअसल, गुरु की प्रासंगिकता पर कोई सवाल ही उठना नहीं चाहिए। समाज में गुरु का प्रयोजन सर्वोपरि है। हिन्दी साहित्य के संत कवि कबीर ने कहा है-

*"गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागु पाय
बलिहारी गुरु आपनो जिन गोविन्द दियो बताया।"*

अर्थात् आपके सामने गुरु और गोविन्द दोनों खड़े हैं। सबसे पहले आप किसके चरण स्पर्श करेंगे? कबीर ने कहा है कि हमें सबसे पहले गुरु के पास जाना चाहिए। क्योंकि गुरु ही हमें भगवान तक पहुंचने का रास्ता दिखाते हैं। गुरु ही हमें गोविन्द की महिमा, अस्तित्व का आभास दिलाते हैं। गुरु ही हमें जीवन में सही मार्ग का दिग्दर्शन कराते हैं। गुरु से शिक्षा ग्रहण करने के बाद गुरु का आशीर्वाद लेकर स्वज्ञान की ज्योति से जीवन के सही मार्ग में आगे बढ़ने की शिक्षा "आत्म दीपो भवः" वाणी में दी गई है। आश्रम या शैक्षिक केन्द्रों से विदा लेकर जिन्दगी की राह में कदम रखने से गुरु आशीर्वाद देते हुए परामर्श देते हैं कि स्वज्ञान की ज्योति से आगे बढ़ना, सही मार्ग पर कदम रखना, असतु पथ पर कदम रखने से पहले विवेक की चेतावनी अवश्य सुनना। माता-पिता से जुदा होकर कहीं दूर पढ़ने या नौकरी करने जानेवाले संतानों से माता-पिता यही परामर्श देते हैं कि अपना कर्तव्य मत भूलना, गलत रास्ते पर कदम मत रखना। सही मार्गदर्शन करानेवाले हमारे माता-पिता भी गुरु के समान ही हैं। पिता-माता तथा समाज के बुजुर्गों से प्राप्त ज्ञान की ज्योति से जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। जिन्दगी की राह पर आगे बढ़ते समय अनेक बाधाएं आ सकती हैं। उस समय क्या उचित है, क्या अनुचित है,

सही रास्ता क्या है परामर्श देने के लिए कोई नहीं रहेगा। विपत्ति के समय आत्मनिर्भर होकर स्वज्ञान की ज्योति से अपने आप का सहारा बनकर सही सिद्धांत लेना होगा। अर्थात् आत्म दीपो भवः।

समकालीन परिस्थिति में भी बुद्ध की इस अमरवाणी की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। आजकल के शैक्षिक केन्द्रों में सिर्फ नम्बर पर अधिक बल दिया जाता है। समाज सेवा, बड़ों के प्रति सम्मान, आध्यात्मिक ज्ञान आदि भावधारा का शिक्षा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है। वर्तमान समाज में विद्या का मूल उद्देश्य धन, नौकरी में ही सीमित रहा। किताबी ज्ञान से शिक्षित कई मेधावी विद्यार्थी आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव के कारण जीवन में हार मान लेते हैं और जीवन के कठिन सिद्धांत ग्रहण करते हैं। जीवन में हार मान चुके विद्यार्थियों के लिए "आत्म दीपो भव वाणी अति प्रासंगिक है।

समाज के अनपढ़, अशिक्षित लोगों के लिए भी इस वाणी का महत्व है। अनपढ़ लोग साधारणतः आत्म निर्भर नहीं है। अपना विवेक दूसरों के पास गिरवी रखकर जीवन में अनेक सिद्धांत लेते हैं। भले ही अनपढ़ अनपढ़ लोगों का किताबी ज्ञान न हो फिर भी उनलोगों का भी आत्मबल, आत्मज्ञान, आत्मविचार है। लेकिन आत्मविश्वास के अभाव के कारण अनपढ़ लोग दूसरों से प्रभावित हो जाते हैं और सामाजिक अंधविश्वास, कुसंस्कार आदि का शिकार हो जाते हैं। अंधविश्वास, कुसंस्कार आदि प्रगति का बाधक तत्व है। समाज से कुसंस्कार, अंधविश्वास आदि दूर करने हेतु "आत्म दीपो भवः" वाणी का प्रचार और प्रसार करना होगा। विश्व में भारत एक वृहत गणतंत्रिक देश के रूप में विख्यात है देश के लोकतंत्र को सबल और सुरक्षित करने के लिए भी "आत्म दीपो भवः वाणी की प्रासंगिकता है। गणतंत्र में जनता ही जनार्दन" कहा जाता है। लेकिन वास्तव में जनता को जनार्दन के रूप में देखने को नहीं मिलता है। जनसेवक की गन्दी राजनीति साधारण जनता को समझ में नहीं आती है। राजनैतिक नेताओं के मिथ्याचार में जनता दिग्भ्रमित होकर अपना चरित्र खो बैठती है।

नेताओं की बातों में आकर साधारण लोग धर्म, जातिभेद को सर्वस्व मानकर अपनों के बीच लड़ने लग जाते हैं और अपना राजनैतिक अधिकार भूल जाते हैं। गणतंत्र सबल होने से राजनैतिक नेता जनता को विचलित नहीं कर सकते हैं। इसलिए समकालीन राजनैतिक परिस्थिति से मुकाबला करने के लिए स्व-ज्ञान की ज्योति से आलोकित होना होगा। दूसरों की बातों में न आकर समाज की भलाई के स्वार्थ में उचित अनुचित का विचार खुद को करना होगा।

सुनागरिक एवं उद्यमी होने के लिए, एक नया समाज का अगुवा बनने के लिए, सबल गणतंत्र का साथ देने के लिए हमें बुद्ध की इस अमरवाणी की याद रखनी होगी- "आत्म दीपो भवः"। □

एक यात्रा: इंजीनियरिंग कॉलेज से असम की सबसे प्रिय कंपनी ऑयल इंडिया लिमिटेड तक

✍ सिद्धार्थ गोगोई

अधीक्षण अभियंता (ओजीपीएल एवं पी)

ओजीपीएल एवं पी विभाग, दुलियाजान

मेरी यात्रा की शुरुआत इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश के साथ हुई। कॉलेज के पहले दिन से ही मैं यह जानता था कि मुझे देश के ऊर्जा क्षेत्र में कुछ बड़ा करना है। बचपन से ही भारत के तेल और गैस क्षेत्र में हो रहे विकास को देखना मेरे लिए प्रेरणादायक रहा, और मैंने इसी क्षेत्र में अपने करियर की दिशा तय की।

इंजीनियरिंग की पढ़ाई करना हमेशा से मेरे जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य था। जैसे ही मैंने कॉलेज में प्रवेश किया, मुझे यह एहसास हुआ कि यह सफर चुनौतियों से भरा होगा। हर विषय को गहराई से समझना और व्यावहारिक रूप में लागू करना मेरे लिए सीखने का एक सुनहरा अवसर था। विभिन्न तकनीकी प्रोजेक्ट्स पर काम करते हुए मेरी सोचने और समस्या सुलझाने की क्षमता में निखार आया। इन दिनों में, मैंने महसूस किया कि असली दुनिया में तकनीकी ज्ञान कितना उपयोगी हो सकता है।

कॉलेज के दौरान मेरा सपना आकार लेने लगा ऑयल इंडिया लिमिटेड में काम करना। असम के तेल उद्योग का यह गौरव न केवल अपने उत्पादन और गुणवत्ता के लिए, बल्कि अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों और असम की आर्थिक उन्नति में योगदान के लिए भी प्रसिद्ध है। मुझे इस कंपनी का हिस्सा बनने की तीव्र इच्छा थी। अंतिम वर्ष में मैंने OIL को अपने करियर का लक्ष्य बना लिया और दिन-रात मेहनत की ताकि मैं इस प्रतिष्ठित कंपनी में स्थान प्राप्त कर सकूँ।

कॉलेज से बाहर निकलने के बाद मेरे सामने कई रास्ते थे, लेकिन मैंने ऑयल इंडिया लिमिटेड में काम करने का निर्णय लिया। सरकारी नौकरियों और बड़ी कंपनियों में जगह पाना आसान नहीं था। इसके लिए प्रतियोगी परीक्षाओं और साक्षात्कारों से गुजरना पड़ा, लेकिन मैंने कभी हार नहीं मानी। मुझे पता था कि OIL में जगह बनाने के लिए मुझे तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ इस क्षेत्र की गहरी समझ भी होनी चाहिए। मैंने खुद को तैयार किया और हर चुनौती का सामना किया।

कड़ी मेहनत के बाद आखिरकार वह दिन आया, जब मुझे ऑयल इंडिया लिमिटेड से नौकरी का प्रस्ताव मिला। वह क्षण मेरे लिए बेहद खास था। मेरा सपना पूरा हो गया था। मुझे असम की इस सबसे सम्मानित कंपनी का हिस्सा बनने का अवसर मिला। यह मेरे लिए सिर्फ एक नौकरी नहीं थी, बल्कि एक ऐसा मंच था जहां मैं देश की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में अपना योगदान दे सकता था।

इंजीनियरिंग कॉलेज से लेकर ऑयल इंडिया लिमिटेड तक की यह यात्रा मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय रही है। इस सफर में मैंने जिलना सीखा है, वह न केवल मुझे एक बेहतर इंजीनियर बना रहा है, बल्कि मुझे एक बेहतर इंसान भी बना रहा है। ऑयल इंडिया लिमिटेड में काम करते हुए, मैं अपने देश के लिए, असम के लिए, और अपनी कंपनी के लिए हर दिन कुछ नया सीख रहा हूँ और अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश कर रहा हूँ।

सोशल मीडिया की स्वास्थ्य संबंधी गलत सूचनाओं का स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव

✍ आनंद कुमार

कनिष्ठ सहायक कर्मचारी-2

ईएंडडी निदेशालय, नई दिल्ली

"ट्विटर, फेसबुक, यूट्यूब और इंस्टाग्राम सूचना के तेजी से और दूरगामी प्रसार में महत्वपूर्ण हैं। स्वास्थ्य संबंधी गलत सूचनाओं का प्रसार विशेषकर स्मार्टफोन पर आसान पहुंच के कारण तेज हो गया है।" सोशल मीडिया पर गलत सूचना के दुष्परिणामों में "वैज्ञानिक ज्ञान की गलत व्याख्या में वृद्धि, राय का ध्रुवीकरण, बढ़ता भय और घबराहट या स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच में कमी" जैसे नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं। उभरती संक्रामक बीमारियों के बारे में यूट्यूब वीडियो में, 20-30% में गलत या भ्रामक जानकारी पाई गई।

विशेषज्ञ और स्वास्थ्य पेशेवर गलत सूचनाओं का खंडन करने और उपयोगकर्ताओं को साक्ष्य-आधारित सूचना स्रोतों की ओर निर्देशित करने के लिए सबसे अच्छी स्थिति में हैं। जवाबी उपायों में रोगियों

और स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों के लिए जागरूकता अभियान, साक्ष्य-आधारित डेटा वाले प्लेटफॉर्म, जन मीडिया में स्वास्थ्य संबंधी सामग्री में वैज्ञानिक साक्ष्य को शामिल करना और मीडिया और स्वास्थ्य साक्षरता में सुधार के प्रयास शामिल हैं।

"विश्वसनीय स्वास्थ्य जानकारी को बढ़ावा देना और प्रसारित करना सरकारों, स्वास्थ्य अधिकारियों, शोधकर्ताओं और चिकित्सकों के लिए सोशल मीडिया में प्रसारित झूठी या भ्रामक स्वास्थ्य जानकारी को मात देने के लिए महत्वपूर्ण है।" यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि सोशल मीडिया चैनलों का उपयोग झूठी या भ्रामक जानकारी का मुकाबला करने के लिए भी किया जा सकता है।

दैनिक व्यायाम का महत्व

सुप्रियो भट्टाचार्य

कनिष्ठ कार्यालय सहायक-1

योजना विभाग, दुलियाजान

आज की तेज़-तरार जीवनशैली में जहाँ अधिकांश लोग घंटों एक जगह बैठकर काम करते हैं, दैनिक व्यायाम एक स्वस्थ जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया है। चाहे हम किसी भी उम्र के हों, व्यायाम न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को भी सुदृढ़ करता है। नियमित व्यायाम करने से हमें कई प्रकार की बीमारियों से दूर रहने में सहायता मिलती है, और यह हमें शारीरिक रूप से सक्रिय और मानसिक रूप से सशक्त बनाए रखता है।

शारीरिक स्वास्थ्य के लाभ

हृदय स्वास्थ्य में सुधार: व्यायाम से हृदय की मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं और रक्त प्रवाह सुचारू रूप से होता है। नियमित शारीरिक गतिविधि से हृदय रोग, उच्च रक्तचाप और स्ट्रोक का खतरा कम होता है। तेज़ चलने, दौड़ने, तैराकी, या साइकिल चलाने जैसे व्यायाम से हृदय बेहतर तरीके से काम करता है और रक्तचाप को नियंत्रित रखता है।

वजन नियंत्रण: रोजाना व्यायाम करने से शरीर की चर्बी कम होती है और वजन को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। यह मेटाबोलिज़्म को बढ़ाता है, जिससे अधिक कैलोरी जलती हैं और वजन संतुलन में रहता है। मोटापा कई गंभीर बीमारियों का कारण बन सकता है, जैसे डायबिटीज़ और

हृदय रोग, लेकिन नियमित व्यायाम से इससे बचा जा सकता है।

हड्डियों और मांसपेशियों की मजबूती: व्यायाम से हड्डियाँ मजबूत बनती हैं और मांसपेशियों की सहनशक्ति बढ़ती है। यह हड्डी संबंधी समस्याओं, जैसे ऑस्टियोपोरोसिस, के जोखिम को कम करता है। भार उठाने वाले व्यायाम और स्ट्रेचिंग से शरीर लचीला रहता है और उम्र बढ़ने के साथ मांसपेशियों की ताकत में गिरावट को रोका जा सकता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि: व्यायाम से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार होता है, जिससे संक्रमण और बीमारियों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है। इससे सर्दी, खांसी और अन्य मौसमी बीमारियों के प्रति शरीर अधिक प्रतिरोधी बनता है।

मानसिक स्वास्थ्य के लाभ

तनाव और चिंता कम करना: व्यायाम मानसिक तनाव और चिंता को कम करने का एक प्रभावी तरीका है। जब हम व्यायाम करते हैं, तो हमारे मस्तिष्क में 'एंडोर्फिन' नामक रसायन का स्राव होता है, जो मूड को बेहतर करता है और सकारात्मक भावनाएँ उत्पन्न करता है।

इससे अवसाद और चिंता जैसी मानसिक समस्याओं से निपटने में मदद मिलती है।

स्मरण शक्ति और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में सुधार: नियमित शारीरिक गतिविधि से मस्तिष्क के विभिन्न हिस्सों में रक्त प्रवाह बढ़ता है, जिससे मस्तिष्क अधिक सक्रिय और सतर्क रहता है। यह याददाश्त और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में सुधार करता है, खासकर बुजुर्गों में यह मस्तिष्क के क्षय को धीमा करने में मददगार है।

नींद में सुधार: जिन लोगों को नींद की समस्या होती है, उनके लिए व्यायाम एक बेहतर उपाय है। यह शरीर को थकान महसूस कराता है, जिससे रात को बेहतर नींद आती है। बेहतर नींद से मस्तिष्क और शरीर दोनों ही अगले दिन के लिए ऊर्जावान रहते हैं।



सामाजिक और भावनात्मक लाभ

व्यायाम का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह सामाजिक जीवन को भी समृद्ध करता है। यदि आप किसी खेलकूद, योग, या फिटनेस क्लास में हिस्सा लेते हैं, तो यह आपको अन्य लोगों से मिलने और सामाजिक रूप से सक्रिय रहने का मौका देता है। इससे सामाजिक संबंध बेहतर होते हैं और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है।

व्यायाम करने के लिए सुझाव

दिन में कम से कम 30 मिनट व्यायाम करना चाहिए। यह तेज़ चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना, या कोई भी शारीरिक गतिविधि हो सकती है जो आपकी फिटनेस स्तर के अनुसार हो।

शुरुआत धीरे-धीरे करें और समय के साथ व्यायाम की अवधि और तीव्रता बढ़ाएं।

ऐसी गतिविधियाँ चुनें जो आपको आनंद देती हों, ताकि आप इसे नियमित रूप से कर सकें।

निष्कर्ष

व्यायाम को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाना आज की जीवनशैली के लिए अनिवार्य है। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक कल्याण के लिए भी महत्वपूर्ण है। रोजाना थोड़ी देर की शारीरिक गतिविधि आपको जीवन भर स्वस्थ और खुशहाल बनाए रख सकती है। □

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में नौकरियों का भविष्य

✍ अयोन घोष

कार्यालय सहायक-2, वित्त एवं लेखा विभाग
कोलकाता कार्यालय, कोलकाता

आज की दुनिया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानि एआई की दुनिया है। जब से chatgpt ने दुनिया में कदम रखा है, तब से सभी को यही डर है कि कहीं ये भविष्य में मानव जाति से काम छीन न ले। हालांकि यह पूरी तरह सत्य नहीं है। लगभग सभी चीजों की तरह एआई फायदेमंद भी है और नुकसानदेह भी। तो चलिए जानते है एआई का इतिहास, कैसे एआई समाज और भविष्य को बदलेगा, कैसे एआई नौकरियों को बदलेगा, एआई का अर्थव्यवस्था पर क्या असर रहेगा और एआई के कुछ लाभदायक असर।

प्रस्तावना

किसी भी विवादास्पद विषय की तरह, हमेशा ऐसे लोग होंगे जो इसके पक्ष में हैं और जो इसके विरोध में हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अलग नहीं है। वास्तव में, जैसे-जैसे नए एआई उपकरण पेश किए जाते हैं, और उनके आसपास की खबरें बढ़ती हैं, तो इसके साथ ही दोनों खेमों के बीच विभाजन भी बढ़ेगा।

कई बाजार अनुसंधान विश्लेषकों का कहना है कि एआई में समाज में कई सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता है, जिसमें उत्पादकता में वृद्धि, बेहतर स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तक पहुंच में वृद्धि शामिल है। लेकिन हमें अभी अनुकूलन करने की जरूरत है।

अन्य लोग कहते हैं, ज्यादातर मानव कार्य प्रकार की नौकरियों में काम करने वाले जो मैन्युअल रूप से दोहराए जाते हैं, कि एआई और रोबोटिक्स एक विघटनकारी शक्ति है और जब नौकरियों के भविष्य की बात आती है तो यह केवल नौकरियों को चुराने का काम करता है। लेकिन रोबोट और एआई प्रौद्योगिकियां कई नए व्यवसाय पैदा कर सकती हैं और करेंगी और जटिल समस्याओं को हल करने में मदद करेंगी और हमारे दैनिक जीवन को आसान और अधिक सुविधाजनक बनाएंगी।

एआई का समाज और भविष्य पर असर

फोर्ब्स का कहना है कि एआई का भविष्य अंतहीन है जो असीमित संभावनाएं और अनुप्रयोग लाता है। यह सब हमारे जीवन को काफी हद तक सरल बनाने में मदद करेंगे। यह भविष्य में मानवता की भविष्यवाणी और नियति को सकारात्मक रूप से आकार देने में मदद करेगा, जबकि बर्नार्ड मारर एंड कंपनी का कहना है कि हमारे समाज पर कृत्रिम बुद्धि के परिवर्तनीय प्रभाव में सभी प्रकार की नौकरियों और उद्योगों पर आर्थिक, कानूनी, राजनीतिक और नियामक प्रभावों तक कहीं भी पहुंच जाएगा और हमें चर्चा करने की आवश्यकता है और के लिए तैयारी।

काफी लोग यह कहते हैं कि एआई के पास अब और भविष्य में समाज में कई सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता है, जिसमें उन्नत उत्पादकता, बेहतर स्वास्थ्य देखभाल, और शिक्षा तक पहुंच में वृद्धि शामिल है। एआई संचालित प्रौद्योगिकियां जटिल समस्याओं को हल करने और हमारे दैनिक जीवन को आसान और अधिक सुविधाजनक बनाने में भी मदद कर सकती हैं।

एआई का नौकरियों पर असर

निवेश बैंक गोल्डमैन सैक्स द्वारा एक रिपोर्ट कहती है कि “एआई 300 मिलियन पूर्णकालिक नौकरियों की जगह ले सकती है।”

यह अमेरिका और यूरोप में एक चौथाई कार्य कार्यों को प्रतिस्थापित कर सकता है लेकिन इसका मतलब नई नौकरियों और उत्पादकता का विस्फोट भी हो सकता है और यह अंततः विश्व स्तर पर 7% द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के कुल वार्षिक मूल्य को बढ़ा सकता है। रिपोर्ट में यू.एस. और यूरोप में दो तिहाई नौकरियों की भी भविष्यवाणी की जाती है “कुछ हद तक एआई ऑटोमेशन के संपर्क में हैं,” और लगभग एक चौथाई नौकरियां जा सकती हैं।

पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय और ओपनई विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने कुछ शिक्षित सफेद कॉलर श्रमिकों को एक वर्ष में 80,000 डॉलर तक कमाई करने वाले एआई से प्रभावित होने की सबसे अधिक संभावना है।

फोर्ब्स भी कहते हैं कि एक एमआईटी और बोस्टन विश्वविद्यालय की रिपोर्ट के मुताबिक, एआई 2025 तक दो मिलियन विनिर्माण श्रमिकों को प्रतिस्थापित करेगा।

कौन सी नौकरियां ज्यादा संकट में हैं?

निम्नलिखित नौकरियां ज्यादा खतरे में हैं;

ग्राहक सेवा प्रतिनिधि

अधिकांश मानव ग्राहक सेवा इंटरैक्शन अब फोन द्वारा नहीं किए जाते हैं और मानव कर्मचारी लाइनों का प्रबंधन करते हैं। अधिकांश समय, ग्राहकों के प्रश्न और समस्याएं दोहराव वाली होती हैं। इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए उच्च भावनात्मक या सामाजिक बुद्धिमत्ता की आवश्यकता नहीं है। इसलिए, अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों के स्वचालित उत्तर प्रदान करने के लिए AI का उपयोग किया जा सकता है।

रिसेप्शनिस्ट

दुनिया भर में अधिकांश कंपनियां अब अपने रिसेप्शन पर रोबोट का उपयोग कर रही हैं। यहां तक कि कॉल्स को भी अब AI द्वारा संचालित किया जा रहा है। AimeReception मेहमानों और ग्राहकों को देख, सुन, समझ और बात कर सकता है।

लेखाकार/बहीखाता

कई कंपनियां अब अपनी बहीखाता पद्धतियों के लिए स्वचालन और एआई का उपयोग कर रही हैं। एआई-संचालित बहीखाता सेवाएं एक कुशल लेखांकन प्रणाली और लचीलापन और सुरक्षा प्रदान करती हैं, यह देखते हुए कि वे क्लाउड-आधारित सेवाओं के रूप में उपलब्ध हैं। एआई एल्गोरिदम का उपयोग करके, एआई यह सुनिश्चित करेगा कि डेटा सही ढंग से एकत्र, संग्रहीत और विश्लेषण किया गया है। समान कार्य करने के लिए किसी कर्मचारी को वेतन देने की तुलना में एआई अकाउंटिंग सेवा का उपयोग करना काफी कम महंगा है।

विक्रेता

वे दिन गए जब निगमों को विज्ञापन और खुदरा गतिविधियों के लिए विक्रेता की आवश्यकता होती थी। विज्ञापन वेब और सोशल मीडिया परिदृश्य की ओर स्थानांतरित हो गया है। सोशल मीडिया में अंतर्निहित लक्ष्य विपणन क्षमताएं विज्ञापनदाताओं को विभिन्न प्रकार के दर्शकों के लिए कस्टम सामग्री बनाने की अनुमति देती हैं।

वेयरहाउस का काम

ऑनलाइन बिक्री एक लगातार बढ़ता हुआ उद्योग है और इसमें प्रक्रियाओं और स्वचालित प्रणालियों की बढ़ती आवश्यकता है जो डिलीवरी के लिए ट्रकों पर ऑर्डर को कुशलतापूर्वक प्राप्त करते हैं। प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए फोकस का एक क्षेत्र स्वचालन का उपयोग रहा है। एक गोदाम में बुनियादी स्वचालन और कृत्रिम कार्यान्वयन पैकेज और प्रत्यक्ष कर्मचारियों का पता लगाने के लिए कम्प्यूटरीकृत सिस्टम तक आसान पहुंच की अनुमति देता है, और भविष्य में एआई शिपिंग क्षमताओं को बढ़ाने के लिए मशीनीकृत पुनर्प्राप्ति और लोडिंग भी कर सकता है।

बीमा

बीमा आवेदकों की व्यवहार्यता पर आकलन करते समय, सबसे महत्वपूर्ण काम अक्सर उपलब्ध डेटा का विश्लेषण करना और उसे सूत्रों या संरचनाओं के एक सेट के भीतर लागू करना होता है।

स्वचालन इन कार्यों को आसानी से पूरा कर सकता है और लगातार अधिक

जटिल कर्तव्यों को पूरा करने के लिए अनुकूलित हो रहा है, जिससे कंपनी को कितने अंडरराइटर्स की आवश्यकता कम हो सकती है।

खुदरा

दुकानों पर सेल्फ-चेकआउट स्टेशन खुदरा क्षेत्र में स्वचालन का एक उदाहरण हैं और किराने की दुकानों और बड़े-बॉक्स आउटलेट में प्रमुखता प्राप्त की है।

जब कोई कंपनी स्व-चेकआउट क्षेत्रों का उपयोग करती है, तो यह लागत-लाभ विश्लेषण के परिणामस्वरूप होता है। हालांकि ग्राहकों को अपनी वस्तुओं को स्कैन करने की अनुमति देने से चोरी की घटनाएं बढ़ सकती हैं, कंपनी कर्मचारियों के काम करने वाले रजिस्ट्रों की आवश्यकता को कम करके अधिक पैसे बचाती है।

एआई के लाभदायक असर

एआई के निम्नलिखित लाभदायक असर हैं;

नौकरियां गईं लेकिन नए अवसर पैदा हुए।

एआई ने पहले से ही उन नौकरियों को प्रभावित किया है जिनमें बार-बार दोहराए जाने वाले और/या कम्प्यूटेशनल कार्यों की आवश्यकता होती है, जैसे कैशियर, कॉल सेंटर एजेंट, फैक्ट्री कर्मचारी, वित्तीय विशेषज्ञ और यहां तक कि समाचार आउटलेट लेखक भी। यह बहुत दूर नहीं है कि ड्राइवर्स, स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों और एकाउंटेंटों को बड़े पैमाने पर एआई संचालित सॉफ्टवेयर द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

नये उद्योग की जरूरतें:

विशेषज्ञों का अनुमान है कि 2025 तक, एआई और रोबोटिक्स ने 90 मिलियन से अधिक नई नौकरियां पैदा की होंगी। एक कमी यह है कि उन्हें वह रचनात्मक क्षमता और कल्पनाशीलता हासिल करने की जरूरत है जो इंसानों के पास है, जिससे वे केवल वही गतिविधियां करने में सक्षम हो सकें जिनके लिए उन्हें प्रशिक्षित किया गया है। इन एआई मॉडलों को प्रशिक्षित करते समय, अक्सर मानव इनपुट के एक बड़े प्रतिशत की आवश्यकता होती है।

उत्पादकता में वृद्धि

नेशनल ब्यूरो ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च (एन्बर) द्वारा हाल के एक शोध पत्र के मुताबिक, उदाहरण के लिए, ग्राहक सहायता एजेंट जिन्होंने एक सामान्य पूर्व-प्रशिक्षित ट्रांसफॉर्मर (जीपीटी) एआई उपकरण का उपयोग किया, उनकी उत्पादकता में लगभग 14% बढ़ावा का अनुभव किया।



खतरनाक नौकरियों को स्वचालित करना:

रोबोट में वास्तव में कुछ खतरनाक कार्यों को स्वचालित करने की क्षमता होती है। कंपनियाँ संभवतः उन्हें ऐसे काम करने के लिए तैनात करेंगी जो जोखिम भरे, नीरस और शारीरिक रूप से कठिन लग सकते हैं। इस तरह, वे जोखिम और लागत को कम कर सकते हैं और समग्र दक्षता बढ़ा सकते हैं। उनका उपयोग उन स्थितियों में भी किया जा सकता है जिनमें मनुष्यों की पहुंच से परे सटीकता और परिशुद्धता की आवश्यकता होती है।

उदाहरण के लिए, तेल अन्वेषण में, रोबोट यह सुनिश्चित करने के लिए भूकंपीय और हवाई सर्वेक्षण कर सकते हैं कि साइट अन्वेषण के लिए सुरक्षित है। मानवयुक्त पुल निरीक्षण के खतरनाक विकल्प के विपरीत इनका उपयोग पुलों के निरीक्षण में किया जा सकता है। यह विकास मानव कार्यबल के स्वास्थ्य और सुरक्षा पर इन नौकरियों के नकारात्मक प्रभाव को कम करेगा।

एआई का अर्थव्यवस्था पर असर

मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट का कहना है कि एआई को अपनाने और आत्मसात करने के वैश्विक औसत स्तर और उनके सिमुलेशन द्वारा निहित एआई में प्रगति पर, निकट भविष्य में और 2030 तक लगभग 13 ट्रिलियन डॉलर की अतिरिक्त वैश्विक आर्थिक गतिविधि प्रदान

करने के लिए एआई का गहरा प्रभाव है।

यह प्रति वर्ष 1.2% अतिरिक्त सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि के बराबर है। यह मुख्य रूप से स्वचालन द्वारा श्रम के प्रतिस्थापन और उत्पादों और सेवाओं में बढ़े हुए नवाचार से आएगा।

उसी रिपोर्ट में कहा गया है कि 2030 तक, औसत सिमुलेशन से पता चलता है कि लगभग 70% कंपनियों ने एआई क्रांति को अपना लिया होगा और कम से कम एक प्रकार की एआई तकनीक को अपनाया होगा, लेकिन आधे से भी कम ने पांच श्रेणियों को पूरी तरह से अवशोषित कर लिया होगा।

उपसंहार

एआई के युग में जॉब अवसर और चुनौतियाँ दोनों हैं। हालांकि कुछ नौकरियाँ बाधित और स्वचालित हो सकती हैं, एआई प्रौद्योगिकियों में मानवीय क्षमताओं को बढ़ाने और नई और रोमांचक नौकरी की संभावनाएं पैदा करने की क्षमता है। नौकरी बाजार की बदलती माँगों के अनुरूप ढलने के लिए कार्यबल को पुनः कुशल बनाना और उन्नत बनाना महत्वपूर्ण है।

एआई को अपनाकर और मानव पूंजी में निवेश करके, हम एक ऐसे भविष्य को आकार दे सकते हैं जहाँ मनुष्य और मशीनें अधिक उत्पादक, नवीन और न्यायसंगत समाज बनाने के लिए मिलकर काम करेंगे। □

मिरिक : एक सुखद यात्रा का अनुभव

✍ आयुष सोमानी

प्रबंधक (सामग्री)

सामग्री विभाग, दुलियाजान

इस वर्ष (2024 में) जनवरी के महीने में मैं सपरिवार अपने मामाजी के यहाँ सिलीगुड़ी गया था। बहुत दिनों से मेरे मामाजी मुझसे सिलीगुड़ी आने का आग्रह कर रहे थे। सिलीगुड़ी मेरा ननिहाल है और ऊपर से उन्हें और नाना-नानी को देखे भी मुझे दो तीन बरस हो चुके थे। अतएव, ठण्ड के दिनों में उनसे मिलने का प्रोग्राम बना लिया।

जब प्रोग्राम बन रहा था, तब उन्होंने सुझाव दिया कि हमें मिरिक का भ्रमण कर लेना चाहिए। इसके पीछे उनका यह तर्क था कि शहर में वो सुकून और मजा नहीं मिलेगा, जो पहाड़ियों में स्थित मिरिक में मिलेगा। आज के समय में जिंदगी की इस अंधाधुंध भाग दौड़ में कुछ पल प्रकृति के संग मिल जाएं तो वही जन्नत है।

यही विचार कर हमने मिरिक घूमने का निश्चय कर लिया। बस फिर, 18 जनवरी, 2024 को मैं अपनी पत्नी सहित तिनसुकिया जंक्शन से राजधानी एक्सप्रेस से सिलीगुड़ी के लिए रवाना हुआ। अगले दिन सुबह यानी 19 जनवरी को गुवाहाटी से उसी ट्रेन में मेरे माता-पिता सवार हुए।

चूंकि ट्रेन विलम्ब से चल रही थी, इसलिए तकरीबन दोपहर के 3 बजे हम न्यू जलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशन पहुंचे, जहाँ मेरे मामाजी पहले से हमें लेने आये हुए थे। उनके साथ हम आधे घंटे का सफर कर के सिलीगुड़ी पहुंचे। उस दिन शाम को हम लोग सब उनके घर में हंसी-मजाक करते रहे और बातचीत में कब शाम बीत गयी पता ही नहीं चला।

अगले दिन सुबह हम लोग सिलीगुड़ी से एक बड़ी सी गाड़ी में मिरिक के लिए रवाना हुए। वैसे तो सिलीगुड़ी अपने देश के उत्तर पूर्व हिस्से में स्थित एक ऐसा नगर है, जहाँ से आप को पूर्वोत्तर राज्यों में घुसने के लिए गुजरना ही पड़ेगा (अगर आप मुख्य भूमि से यात्रा कर रहे हैं)। ये जगह सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ भारत के जमीन की चौड़ाई सिर्फ 22 किलोमीटर है। इसकी एक ओर हिमालयी देश भूटान है और दूसरी ओर बांग्लादेश है। इसलिए यहाँ सुरक्षा भी चाक चौबंद ही रहती है। लेकिन ये भी एक आश्चर्य है कि यदि आपको देश के उत्तर पूर्व के पहाड़ी इलाकों में जाना है (चाहे गंगटोक हो, दार्जीलिंग हो, कुर्सेओंग



हो या अरुणाचल की सुन्दर वादियां हो), तो आपको सिलीगुड़ी होकर ही जाना होगा।

बहरहाल, भारतीय सेना के पूर्वी कमान के अधीन सुकमा सैन्य छावनी और पहाड़ी रास्तों से गुजरते हुए हम लोग डेढ़ घंटे में मिरिक पहुंच गए। मिरिक एक हिलस्टेशन है, जहाँ के हसीन नजारों आपका मन मोह लेंगे। यहाँ होटल कम हैं, अपितु गेस्ट हाउस ज़्यादा हैं क्योंकि यहाँ के निवासी अतिथियों को भगवान मान कर उनका गर्मजोशी से आतिथ्य सत्कार करते हैं। और आमतौर पे ये होटल और गेस्ट हाउस ज्यादातर पहाड़ी ढलान पर ही स्थित हैं। हम जहाँ ठहरे थे, वो जगह मिरिक का हृदय है, जहाँ एक ओर हिमालय की ऊँची ऊँची चोटियां (मुख्य रूप से कंचनजंघा) दिखाई देती हैं और दूसरी ओर एक बड़ा सरोवर और उससे सटे वनप्रान्त है, जो किसी की भी आत्मा में बस जाती है। जो हमारे मेज़बान थे, वो यहाँ के मूल निवासी थे, जिनकी पत्नी और बच्चे इंग्लैंड में रहते थे और उन्होंने अपनी सेवाएं इंग्लिश सैनिक के तौर पे दी थीं। उनका कहना था कि उनका मन मिरिक के अलावा कहीं और लगता ही नहीं था, इसलिए वो सेवानिवृत्ति के बाद यहाँ वापस चले आये थे। खैर, गेस्ट हाउस पहुंचकर पहले हमने जायकेदार खाने का लुत्फ उठाया और बरामदे से ही हर ओर अपनी नज़र दौड़ते हुए हम रमणीय दृश्यों का आनंद ले रहे थे। फिर हमने अपने कमरों में आराम किया और उसके बाद हम वहाँ के मुख्य सरोवर की ओर चल दिए जहाँ पर हमने नौकायन का आनंद लिया। वहीं पे बहुत सी दुकानें हैं जहाँ लोग वहाँ के पारम्परिक वस्त्र और अनूठे वस्तुओं का विक्रय कर रहे थे। ऐसी दुकानें भी थी, जहाँ वो लोग आपको थोड़ा सा शुल्क देने पर कुछ समय के लिए वहाँ की पारम्परिक वेश भूषा से सुसज्जित कर देते हैं और आपके अनुरोध पर आपकी फोटो भी खींच के देते हैं। हमने भी इस

बात का लाभ उठाया और न सिर्फ वहाँ से चीज़ें खरीदीं, बल्कि वहाँ के पारम्परिक वेश को धारण कर के प्रफुल्लित भी हुए। उस जगह पर घुड़सवारी का भी मज़ा चाहे तो ले सकते हैं। हमने भी ऐसा ही किया।

शाम जैसे जैसे गहराती गयी, ठंडक उतनी ही बढ़ती गयी। रात में टिमटिमाते तारों ने जब अपना आँचल फैला लिया, तब हमने वहाँ पे अलाव जलाया और रात के खाने का स्वाद चखा, जो की वाकई कमाल का था। फिर अलाव के सामने नाचते गाते और गप्पे लड़ाते हुए रात कैसे बीत गयी, पता ही नहीं चला। क्योंकि वो जनवरी का महीना था, इसलिए ठण्ड तो इतनी जोर की थी की तीन-तीन कम्बल ओढ़ने के बाद भी हम काँप रहे थे। ऐसे में मेज़बान के सलाह अनुसार हमने वहाँ के पारम्परिक काढ़े का पान किया, जिसके कारण शरीर में ऊष्मा का संचार हुआ और हमारी जान में जान आयी।

अगले दिन सुबह वहाँ पास के शिव मंदिर में हम दर्शन करने गए और भोलेनाथ का आशीर्वाद लिया। थोड़ा पैदल सैर कर के हम नहा धो के तैयार हो गए और नाश्ता कर लिया। फिर वहाँ के निवासियों से वार्तालाप कर के उनकी ज़िन्दगी जीने के तरीके को जाना। तब हमने यही पाया कि वहाँ पे आमदनी मुख्यतः पर्यटन और चाय की खेती से ही होती है। और यह भी समझा कि जब कोरोना की महामारी फैली तब उन लोगों को जीवन यापन करने के लिए कितनी मशक्कत करनी पड़ी थी। आखिर में एक बार फिर से वहाँ के बाज़ार का भ्रमण करते हुए हमने मिरिक को अलविदा कहा और फिर से यहाँ वापस आएंगे, ये सोच के हम सिलीगुड़ी वापस आ गए, जहाँ दो दिन बिताने के बाद हम फिर से दुलियाजान वापस आ गए।

ये यात्रा बहुत सुखद और आनंदमयी रही और मेरी इच्छा है कि मैं जल्दी ही इस स्थान पर पुनः लौटूँ। □

शक्कर : एक मौन हत्यारा

दीपन मंडल

कार्यालय सहायक-1, वित्त विभाग

कोलकाता कार्यालय, कोलकाता

शक्कर हमारे दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। चाहे वह चाय में डाली गई हो, मिठाइयों में मिलाई गई हो या फिर पैकेज्ड फूड और सॉफ्ट ड्रिंक्स में, शक्कर हर जगह मौजूद है। लोग इसे स्वाद और ताजगी के लिए उपयोग करते हैं, लेकिन शायद वे यह नहीं जानते कि यह हमारी सेहत के लिए कितनी खतरनाक है। आधुनिक जीवनशैली और भोजन की आदतों में शक्कर का अत्यधिक उपयोग अब एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या बन चुका है। शक्कर को एक 'मौन हत्यारा' कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि यह धीरे-धीरे लेकिन लगातार हमारे शरीर को अंदर से नुकसान पहुंचाती रहती है।

शक्कर का विज्ञान और उसका प्रभाव

शक्कर का मुख्य घटक ग्लूकोज और फ्रुक्टोज होते हैं, जो शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं। हालांकि, जब हम आवश्यकता से अधिक मात्रा में शक्कर का सेवन करते हैं, तो यह ऊर्जा के रूप में संग्रहित होने के बजाय वसा के रूप में शरीर में जमा हो जाती है। शक्कर रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) के स्तर को तेजी से बढ़ाती है, जिससे शरीर में इंसुलिन की आवश्यकता भी बढ़ जाती है। इंसुलिन एक हार्मोन है जो रक्त में शर्करा को नियंत्रित करता है, और इसका अत्यधिक स्राव शरीर के अंगों को नुकसान पहुंचा सकता है।

मोटापा और शक्कर का संबंध

शक्कर का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव मोटापे के रूप में देखा जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, पिछले कुछ दशकों में शक्कर के अत्यधिक सेवन के कारण मोटापे की दर में खासी वृद्धि हुई है। शक्कर से भरे खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थों में खाली कैलोरी होती हैं, जो भूख को संतुष्ट नहीं करतीं। नतीजतन, लोग अधिक खाते हैं और शरीर में अतिरिक्त वसा जमा हो जाती है। मोटापा सिर्फ एक सौंदर्य समस्या नहीं है, बल्कि यह हृदय रोग, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी गंभीर बीमारियों का मुख्य कारण बनता है।

मधुमेह और शक्कर

मधुमेह, विशेष रूप से टाइप 2 डायबिटीज, का सीधा संबंध शक्कर के अधिक सेवन से है। जब शक्कर का सेवन बढ़ता है, तो शरीर इंसुलिन के प्रति संवेदनशीलता खोने लगता है। इसका परिणाम यह होता है कि रक्त में ग्लूकोज का स्तर अनियंत्रित हो जाता है, जिससे डायबिटीज जैसी गंभीर स्थिति उत्पन्न होती है। एक बार जब व्यक्ति मधुमेह का शिकार हो जाता है, तो उसे अपने भोजन पर विशेष ध्यान देना पड़ता है और जीवन

भर उसे इंसुलिन या अन्य दवाओं का सहारा लेना पड़ता है।

हृदय रोगों का खतरा

अत्यधिक शक्कर का सेवन हृदय रोगों का कारण बन सकता है। जब शक्कर की अधिकता से शरीर में वसा बढ़ती है, तो यह रक्त वाहिकाओं में जमा हो जाती है। इससे धमनियों में रुकावट होती है, जो दिल का दौरा या स्ट्रोक का कारण बन सकता है। कई शोधों ने यह सिद्ध किया है कि जो लोग शक्कर युक्त खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन करते हैं, उनमें हृदय रोगों का खतरा उन लोगों की तुलना में कहीं अधिक होता है जो संतुलित आहार का सेवन करते हैं।

शक्कर का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

यह बात आमतौर पर कम चर्चा में आती है कि शक्कर का मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शक्कर के अत्यधिक सेवन से मस्तिष्क की कार्यक्षमता कम होती है। शक्कर तुरंत ऊर्जा देती है, लेकिन जब रक्त शर्करा का स्तर गिरता है, तो मूड स्विंग्स, थकान और चिड़चिड़ापन जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। लंबे समय तक शक्कर का अधिक सेवन मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं जैसे अवसाद और चिंता का कारण भी बन सकता है।

दांतों की सेहत और शक्कर

शक्कर और दांतों की सेहत के बीच का संबंध शायद सबसे पुराना और सामान्य ज्ञान है। जब हम शक्कर खाते हैं, तो मुंह में मौजूद बैक्टीरिया उसे एसिड में बदल देते हैं, जिससे दांतों की सड़न होती है। यह समस्या केवल बच्चों तक सीमित नहीं है, बल्कि वयस्कों में भी शक्कर के अत्यधिक सेवन से दांतों की समस्याएं बढ़ रही हैं।

पैकेज्ड फूड्स में शक्कर की छिपी मात्रा

आजकल की जीवनशैली में ताजगी और स्वाद के लिए लोग पैकेज्ड



फूड्स का अधिक सेवन करते हैं। यह बात चौंकाने वाली है कि इन खाद्य पदार्थों में बहुत अधिक मात्रा में शक्कर छिपी होती है। सॉस, सूप, ब्रेड, और यहां तक कि हेल्थ ड्रिंक्स में भी शक्कर मिलाई जाती है। यह शक्कर केवल स्वाद बढ़ाने के लिए ही नहीं, बल्कि इन खाद्य पदार्थों की शेल्फ लाइफ बढ़ाने के लिए भी उपयोग की जाती है। यह छिपी हुई शक्कर हमारे शरीर में धीरे-धीरे जमा होती रहती है और हमें इसका एहसास भी नहीं होता कि हम कितनी शक्कर का सेवन कर रहे हैं।

कैसे बचें शक्कर के खतरे से?

शक्कर के खतरों से बचने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम अपने आहार में शक्कर की मात्रा को नियंत्रित करें। प्राकृतिक शर्करा जैसे फलों में पाई जाने वाली शर्करा की तुलना में रिफाइंड शुगर (संसाधित शक्कर) शरीर के लिए अधिक हानिकारक होती है। हमें फलों और सब्जियों का अधिक सेवन करना चाहिए, क्योंकि उनमें न केवल शर्करा की उचित मात्रा होती है, बल्कि फाइबर और अन्य पोषक तत्व भी होते हैं जो शरीर के लिए लाभकारी होते हैं। इसके अलावा, सॉफ्ट ड्रिंक्स, पैकेज्ड फूड्स और मिठाइयों का सेवन कम से कम करना चाहिए।

अच्छी आदतें जैसे पानी का अधिक सेवन, ताजे फलों के जूस की जगह साबुत फल खाना, और अपने भोजन में रिफाइंड शुगर की मात्रा को सीमित करना बेहद जरूरी है। इसके साथ ही, हमें अपने खाने की आदतों पर नियंत्रण रखना चाहिए और उन खाद्य पदार्थों को प्राथमिकता देनी चाहिए जो हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हों।

निष्कर्ष

शक्कर का सेवन कम मात्रा में सही हो सकता है, लेकिन इसका अत्यधिक सेवन गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनता है। शक्कर एक मौन हत्यारा है जो धीरे-धीरे हमारे शरीर को अंदर से कमजोर करती है। यह केवल मोटापा और मधुमेह ही नहीं, बल्कि हृदय रोग, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं और दांतों की समस्याओं का भी कारण बनती है। हमें अपने आहार में शक्कर की मात्रा को सीमित करके और स्वस्थ विकल्प अपनाकर अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए सचेत रहना चाहिए। शक्कर की मीठी दुनिया में जीना भले ही आसान हो, लेकिन इससे उत्पन्न खतरों को नजरअंदाज करना हमारी सबसे बड़ी भूल हो सकती है। □

जलवायु परिवर्तन के प्रति सुनम्य भारत हेतु वैकल्पिक तकनीकें

गीतांजन रॉय

कार्यालय सहायक -1 (केबी)

वित्त विभाग, कोलकाता कोलकाता

"विश्व एक ऐसी दिशा में अग्रसर हो रहा है जहाँ जलवायु परिवर्तन की प्रवृत्ति अपरिवर्तनीय हो सकती है। यदि ऐसा होता है तो यह वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों को स्वस्थ और सतत ग्रह के अधिकार से वंचित कर सकता है और यह संपूर्ण मानव जाति के हित में हानिकर होगा।"

- कोफी अन्नान

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का सामना करने, अनुकूलन करने और उससे उबरने में समुदायों, पारिस्थितिकी तंत्रों, बुनियादी ढाँचे और बड़े पैमाने पर समाज जैसी विविध प्रणालियों की सामूहिक क्षमता को जलवायु परिवर्तन के प्रति आघात सहनीयता कहते हैं। इसमें जलवायु दशाओं में बदलाव के कारण होने वाले तनाव और दबाव को बिना किसी महत्वपूर्ण व्यवधान या क्षति के झेलने की क्षमता शामिल है, जिससे इन प्रणालियों की चुनौतियों की दशा में भी कार्यशीलता बनी रहती है।

मूल रूप से, जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य दीर्घावधि में ताप और मौसम के प्रतिरूप में होने वाले स्थायी परिवर्तनों से है। यद्यपि ऐतिहासिक दृष्टि से जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक कारकों जैसे- सौर सक्रियता में बदलाव अथवा बड़े ज्वालामुखीय उद्गार से प्रभावित हुआ है किंतु 1800 के

बाद से जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारण मानवीय गतिविधियाँ रही हैं। कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधन के दहन से वायुमंडल में विशेष रूप से कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ग्रीनहाउस गैसों उत्सर्जित होती हैं। ये गैसों ऊष्मा प्रग्रहित करती हैं, जिससे वैश्विक ताप बढ़ता है।

जलवायु परिवर्तन के प्रति आघात सहनीयता हेतु वैकल्पिक तकनीकों में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का शमन करने और उसके अनुकूल होने के उद्देश्य से समाधानों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव में तीव्रता और विस्तार के साथ जलवायु परिवर्तन का सामना करने की अनिवार्यता और भी स्पष्ट होती जा रही है। इसके प्रभावों की बढ़ती गंभीरता जलवायु परिवर्तन के प्रति आघात सहनीयता को वर्द्धित करने में वैकल्पिक तकनीकों की महत्ता को रेखांकित करती है।

करने की उनकी क्षमता है। पारंपरिक वाहनों के विपरीत जो सीधे अपने टेलपाइप से प्रदूषक उत्सर्जित करते हैं, EV शून्य टेलपाइप उत्सर्जन उत्पन्न करते हैं। इसका अर्थ है कि वे संचालन के दौरान वायु में हानिकारक प्रदूषक मुक्त नहीं करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य और पारिस्थितिकी तंत्र दोनों के लिये स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण बनता है।

इसके अतिरिक्त, EV के पर्यावरणीय लाभों को सौर, पवन या जलविद्युत जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से चार्ज करके और भी बढ़ाया जा सकता है। विद्युत ऊर्जा के स्वच्छ व नवीकरणीय स्रोतों का उपयोग करके, EV के उपयोगकर्ता अपने कार्बन फुटप्रिंट को बहुत कम कर सकते हैं और अपने वाहनों से जुड़े समग्र पर्यावरणीय प्रभाव को कम कर सकते हैं। EV और नवीकरणीय ऊर्जा के बीच यह संतुलन अधिक संधारणीय एवं कम कार्बन परिवहन प्रणाली की ओर संक्रमण में योगदान देता है।

वैकल्पिक प्रौद्योगिकियों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये सहायक नीतिगत फ्रेमवर्क और संस्थागत क्षमता निर्माण की आवश्यकता होती है। जलवायु परिवर्तन पर भारत की राष्ट्रीय कार्य योजना जलवायु तन्यकता के लिये एक रोडमैप प्रदान करती है, जिसमें प्रौद्योगिकी विकास और प्रसार पर बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त, नवाचार को बढ़ावा देने और वैकल्पिक प्रौद्योगिकियों को बढ़ाने के लिये सरकारी एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों एवं निजी क्षेत्रों के बीच सहयोग आवश्यक है।

अपनी क्षमता के बावजूद, वैकल्पिक प्रौद्योगिकियों को उच्च अग्रिम लागत तकनीकी जटिलता और संस्थागत निष्क्रियता जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिये अनुसंधान एवं विकास, क्षमता निर्माण और सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देने के लिये ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और वित्तपोषण तंत्र का लाभ उठाने से प्रौद्योगिकी अंतरण एवं अभिग्रहण में तेजी आ सकती है, जिससे विकास के अवसर खुल सकते हैं।

गुजरात सोलर पार्क बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा परिनियोजन की व्यवहार्यता को प्रदर्शित करता है, जो लाखों लोगों को स्वच्छ ऊर्जा तक पहुँच प्रदान करता है। इसी तरह, सिक्किम ऑर्गेनिक मिशन कृषि

तन्यकता को बढ़ाने और पारिस्थितिक स्थिरता को बढ़ावा देने में जैविक खेती की परिवर्तनकारी क्षमता को प्रदर्शित करता है। केरल का कुट्टानाड बैकवाटर एक ऐसा सरल समाधान है, जिसके तहत भूमि पर स्थान घेरे बिना सौर ऊर्जा उत्पादन के लिये अप्रयुक्त जल निकासों का उपयोग किया जाता है। 120 मेगावाट का यह फार्म भारत में सबसे बड़ा संचालित फ्लोटिंग सोलर प्रोजेक्ट है, जो इस तकनीक की क्षमता को दर्शाता है।

भारत में जलवायु तन्यकता बनाने के लिये ऐसे अभिनव समाधानों की आवश्यकता है जो आर्थिक विकास का पर्यावरणीय स्थिरता के साथ सामंजस्य स्थापित करें। वैकल्पिक प्रौद्योगिकियाँ जलवायु-अनुकूल विकास, नवीकरणीय ऊर्जा का दोहन, कुशल जल प्रबंधन, संधारणीय कृषि और आघातसह शहरी बुनियादी अवसंरचना की ओर एक मार्ग प्रदान करती हैं। हालाँकि, उनकी पूरी क्षमता को साकार करने के लिये सहायक नीतियों, संस्थागत क्षमता निर्माण और हितधारक सहयोग की आवश्यकता होती है। वैकल्पिक प्रौद्योगिकियों को अपनाकर, भारत समावेशी और सतत् विकास को बढ़ावा देते हुए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना कर सकता है।

सरकारी एजेंसियों, शोध संस्थानों, निजी क्षेत्रों और नागरिक समाज संगठनों को नवाचार को बढ़ावा देने तथा वैकल्पिक प्रौद्योगिकियों के विस्तार को सुविधाजनक बनाने के लिये मिलकर काम करना चाहिये। संसाधनों, विशेषज्ञता और ज्ञान को संगठित करके ये सहयोगी प्रयास तकनीकी अभिग्रहण की गति को तेज कर सकते हैं और जलवायु तन्यकता की दिशा में सार्थक प्रगति को आगे बढ़ा सकते हैं।

“Climate change is the single greatest threat to a sustainable future, but, at the same time, addressing the climate challenge presents a golden opportunity to promote prosperity, security and a brighter future for all.”
अर्थात्

“जलवायु परिवर्तन एक संधारणीय भविष्य के लिये सबसे बड़ा खतरा है, लेकिन साथ ही, जलवायु चुनौती से निपटना सभी के लिये समृद्धि, सुरक्षा और उज्ज्वल भविष्य को बढ़ावा देने का एक सुनहरा अवसर भी प्रस्तुत करता है।”

— बान की मून

हिंदी और भारतीय संस्कृति

तमश्री शैकिया

आश्रित - ऋतुराज बोरा

वरिष्ठ कार्यालय सहायक-2

सामग्री विभाग, दुलियाजान

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।
अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।
- भारतेंदु हरिश्चंद्र

प्रस्तावना - भाषा विचारों के आदान प्रदान का सशक्त माध्यम है। भाषा का प्रादुर्भाव और विकास मनुष्य के विकास के साथ-साथ आगे बढ़ा। हमारे देश में यमन, हूण, मुगल और अंग्रेज आये, साथ ही अपनी संस्कृतियों को भी साथ लाये। इसलिए प्राकृत भाषा में अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी, आदि भाषाओं के शब्दों का समावेश हो गया। जब हम आजाद हुए, उस समय हमारे देश में सरकारी काम काज की भाषा अंग्रेजी थी। अतः देश के सम्मुख बड़ी समस्या थी कि आजादी के बाद हमारे सरकारी कामकाज की भाषा क्या होगी? इसके लिए एक सर्वेक्षण हुआ। सर्वेक्षण से यह बात सामने उभर कर आई कि देश के सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। अतः संविधान की धारा 343 के अंतर्गत देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। हिंदी की देवनागरी लिपि पूर्णतः वैज्ञानिक है। हिंदी भाषा में जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है जिसके कारण संवाद और उसके लेखन में त्रुटियां न के बराबर होती हैं। भाषा विज्ञान के अनुसार हिंदी एक पूर्ण भाषा है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखें तो भारतवर्ष में हिंदी बोलने वालों की संख्या अंग्रेजी बोलने वालों की अपेक्षा बहुत अधिक है। अतः हम इसे संपर्क भाषा की संज्ञा देते हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा था- "राष्ट्र के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सब से अधिक सहायक है।"

भारतीय संस्कृति - 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् समस्त संसार एक परिवार है। इस भावना ने मानव को मानव प्रेम करना सिखाया है। इसी प्रकार-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग भवेत् ॥

यह प्रार्थना हमारी दिव्य संस्कृति का प्राण है। इसी के आधार पर यह आज तक टिकी है। हमें गर्व है कि हम इस श्रेष्ठ संस्कृति के पुजारी हैं। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन एवं महान संस्कृति है जिसकी मिसाल



पूरी दुनिया में दी जाती है। भारतीय संस्कृति सर्वाधिक संपन्न और समृद्ध है, जो सदियों से फलती-फूलती आ रही है। भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहां सभी धर्म, जाति, समुदाय आदि के लोग मिलजुल कर रहते हैं और वो अपनी-अपनी परंपराओं और रीति-रिवाजों का पालन करने के लिए भी स्वतंत्र हैं। इसलिए, भारतीय संस्कृति विविधता, परंपरा और एकता का प्रतीक है, जो इसे वास्तव में सबसे अलग बनाती है। भारतीय संस्कृति प्राचीन परंपराओं से युक्त अपनी विविधता और समृद्धि के लिए जानी जाती है। इसमें विभिन्न रंगों, स्वादों और प्रथाओं का मिश्रण शामिल है। भारतीय संस्कृति के सबसे आकर्षक पहलुओं में से एक देश भर में बोली जाने वाली भाषाओं की व्यापक विविधता है, जिसमें हिंदी प्रमुख भाषा के रूप में प्रचलित है। इसके अतिरिक्त, भारतीय संस्कृति में लोगों के अंदर एक-दूसरे के प्रति प्रेम, भाईचारा, सम्मान, आदर, परोपकार, सद्भाव एवं भलाई की भावना निहित है, जो इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। अतः भारतीय संस्कृति विविधता, परंपरा और एकता का समावेश है।

हिंदी भाषा का इतिहास- विश्वास किया जाता है कि इसकी उत्पत्ति देवनागरी लिपि में हुई थी, जो एक प्राचीन लिपि है। इसके उत्थान का संबंध महाभारत काल से माना जाता है, जब इस भाषा का प्राचीन रूप विकसित हुआ था। हिंदी का भाषिक विकास विभिन्न क्षेत्रों में हुआ और विभिन्न राजाओं और साम्राज्यों के आदिकाल से जुड़ा है। भारत एक बहुभाषी देश है। हिंदी की उत्पत्ति का संबंध संस्कृत और अपभ्रंश से जोड़ा जाता है। हिंदी के वर्तमान स्वरूप के विकास से पहले खड़ी बोली के कई साहित्यिक रूप विकसित थे, जैसे दकनी, उर्दू, हिंदुस्तानी आदि। उन्नीसवीं सदी हिंदी के विकास की दृष्टि से निर्णायक सदी है।

आधुनिकता की अवधारणा और राजभाषा के सवाल से हिंदी के स्वरूप निर्धारण और विकास का गहरा संबंध है। साथ ही उन्नीसवीं सदी के नवजागरण के पुरोधों, यथा राजा शिवप्रसाद, भारतेन्दु, बालकृष्ण भट्ट, अयोध्याप्रसाद खत्री, महावीर प्रसाद द्विवेदी, देवकीनंद खत्री आदि का हिंदी के विकास में उल्लेखनीय योगदान है।

हिंदी और भारतीय संस्कृति - संस्कृतियां और भाषाएं दोनों एक दूसरे की वाहक होती हैं। इसके बिना मनुष्य जीवन तो अधूरा है ही चर अचर भी अधूरा है। हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। आत्मा से विमुख होकर कोई भी इंसान संपूर्ण विकास नहीं कर सकता। ये देश की विभिन्न भाषाओं को एक सूत्र में पिरोने के लिए सक्षम है। हिंदी हमारे बोलचाल का माध्यम ही नहीं बल्कि हमारी संस्कृति की पहचान, अस्मिता और एकता के सूत्र के लिए जानी जाती है। हिंदी भाषा हमारी आत्मा में रची-बसी है। दो सौ वर्षों का साम्राज्यवादी शासन झेलने के बाद हिंदी नष्ट होने के बजाय और गतिशील होती चली गई। साधु संतों फकीरों व्यापारियों शासकों धार्मिक स्थलों और आम जनता ने जिस हिंदी को गढ़ा वो दक्षिण में अपनी पहचान दक्खिनी के रूप में बनाती रही या जो हिंदी हिंदुई, हिंदवी, एंडुई, या फिर रेखता -रेखत हो कर स्वतंत्रता आन्दोलन का माध्यम बनी। चाहे वो समाचार पत्रों के माध्यम से हों या जन जागरण के गीतों के माध्यम से हो।। कश्मीर से कन्याकुमारी तक और पश्चिमी घाट से ले कर अरुणाचल तक देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की बहुत बड़ी भूमिका है। विभिन्न जो छोटी बड़ी संस्कृतियां हैं, उनकी अपनी अलग भाषाएं हैं हर भाषा की अपनी एक संस्कृति होती है जो हजारों वर्षों में विकसित होती है जिसके मूल में हिंदी हैं। आजादी के आंदोलन को एकता में पिरोने में हिंदी भाषा ही महत्वपूर्ण थी।

हिंदी का योगदान भारतीय संस्कृति में हमेशा से रहा है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनियाभर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी विश्वव्यापी भाषा होने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति की सम्यहीका भी है। हिंदी अपनी आंतरिक चुनौतियों से जूझते हुए आज राजभाषा ही नहीं, बल्कि विश्वभाषा बनने के निकट है। इसमें अन्य भाषाओं को आत्मसात करने की क्षमता है जो कि हिंदी की सबसे बड़ी पहचान है।

किसी भी राष्ट्र के सभ्यता संस्कृति का प्रतीक उसकी राजभाषा होती है। हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति का प्राण है जो पूरे देश को एक सूत्र में जोड़े रखती है। भारतीय संस्कृति समृद्ध और विविधतापूर्ण है, जिसका इतिहास हजारों वर्षों तक फैला हुआ है। भारतीय संस्कृति परंपराओं, भाषाओं,

धर्मों और कला रूपों का एक अनूठा मिश्रण है। अनेकता में एकता, निरंतरता, सहनशीलता, वसुधैव कुटुंबकम की भावना, आध्यात्मिकता और ग्रहणशीलता भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषताएं हैं। भारतीय संस्कृति का मूल आधार आध्यात्मिकता है, जो कि मूल रूप से धर्म, कर्म एवं ईश्वरीय विश्वास से जुड़ी हुई है। भारतीय संस्कृति में लोगों के अंदर राष्ट्रीय एकता की भावना निहित है। राष्ट्र पर जब-जब कोई संकट आया है, तब-तब भारतीयों ने एक होकर इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी है। भारतीय संस्कृति संसार की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। पूरी दुनिया में मिसाल के तौर पर दी जाने वाली भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन और महान संस्कृति है। यह संस्कृति सर्वाधिक संपन्न एवं समृद्ध भी है, जिसका मूल तत्व अनेकता में एकता है। इस देश में, विभिन्न जातियों, धर्मों, समुदायों, लिंगों और पंथों के लोग मिलजुल कर रहते हैं और प्रत्येक को अपनी अनूठी परंपराओं और रीति-रिवाजों को बनाए रखने की स्वतंत्रता है।

निष्कर्ष : भारत की सबसे बड़ी भाषा हिंदी विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हिंदी भाषा केवल विचार अभिव्यक्ति का माध्यम न होकर शिक्षा, सेवा व संस्कार सिंचन का कार्य कर रही है। हिंदी में जो मिठास, भाव व अनेक प्रकार से बात कहने का तरीका है, वह किसी अन्य भाषा में नहीं है। इक्कीसवीं सदी भारत एवं भारतीयों की सदी है। ऐसे में भारत के सांस्कृतिक प्रतिमानों का वैश्विक स्वरूप ग्रहण करना एवं विश्व की श्रेष्ठतम सभ्यताओं में अपनी विशेष पहचान निर्मित करना; आम धारणा बन गया है। अतः भारतीय भाषाओं की यह वैश्विक स्वीकार्यता भारत को विश्व से एवं विश्व को भारत से जोड़ने हेतु समन्वय सेतु का निर्माण कर रही हैं, जिसमें हिंदी इन सभी भाषाओं की सिरमौर बनकर उभर रही हैं। हिंदी भाषा विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हिंदी भाषा केवल विचार अभिव्यक्ति का माध्यम न होकर शिक्षा, सेवा व संस्कार सिंचन का कार्य कर रही है।

भाषा वही महत्वपूर्ण होती है जो लोगों को 'तोड़ने के बजाय 'जोड़ने का संदेश दे और जिसके माध्यम से प्रेम का मार्ग प्रशस्त हो। इसी पावन भावना से प्रेरित होकर महाकवि जायसी ने यह कहा था:

तुरकी, अरबी, हिन्दुई, भाषा जेती आहि।

जेहि मुँह मारग प्रेम का, सबै सराहे ताहि ॥

वर्तमान के वैश्वीकरण और निजीकरण के समय में अन्य देशों के साथ भारत के बढ़ते व्यापारिक संबंधों ने एक-दूसरे देशों की भाषाओं को सीखने की आवश्यकता को और भी अधिक बढ़ा दिया है। एक-दूसरे देश के साथ सहयोग एवं विकास की भावना के कारण हिंदी की लोकप्रियता अन्य देशों में बहुत अधिक बढ़ी है। □

काश, हम बड़े न होते

✍ आदित्य भारती
वरिष्ठ कार्यालय सहायक -2
निगमित योजना विभाग, नोएडा

काश, हम कभी बड़े न होते,
ममता के आँचल में ही छुपे रहते।

यह जिम्मेदारियों का बोझ,
यह जीवन की परेशानियाँ।

जिंदगी में दर बदर भटकना,
सबकुछ पाना और खो देना।

दो पल का भी सुकून नहीं रह गया,
समय का चक्र में सबकुछ छिन गया।

काश, हम कभी बड़े न होते
सुबह हुई, रात हुई, यही क्रम चलता रहा।

अपने मसरूफियत में इतना खोते गए,
न वक्त का पता चला, न उम्र का।

आईना ने हमको लकीरें दिखा दिया,
हर क्षण एक नयी पहेली है।

कहीं कुआँ तो कहीं खाई है,
कुछ खट्टा, कुछ मीठा सा जीवन है।

यही जीवन की सचाई है,
काश, हम कभी बड़े नहीं होते,
काश, हम कभी बड़े न होते □

वन के बीच एक बर्फ़ीली शाम

✍ मूल: रॉबर्ट फ्रॉस्ट
अनुवाद: अजय दास
कनिष्ठ कार्यालय सहायक -1
मानव संसाधन अधिग्रहण विभाग, दुलियाजान

ये वन किसके है, शायद मुझे पता है
यहीं गाँव में घर है, वह उसमें रहता है
कब उसे ज्ञात होगा मैं यहाँ रुका था ?
और इन्हें बर्फ़ से ढँका हुआ देखा था !

अश्व सोचता होगा मैं कितना अजीब हूँ
आसपास कोई सराय भी नहीं और मैं
एक निविड़ वन और बर्फ़ सी जमी झील के
ठीक बीच आकर ठहरा हूँ—
साल की सबसे घनी और काली संध्या को !

कुछ झिंझोड़कर अपनी गर्दन वह कहता है
आज यहाँ आकर शायद कुछ गलती कर दी !
आती है आवाज़ हवा सरसरा रही ज्यों
आती है आवाज़ हिमकणों के झरने की !

वन है मनोरम, फैल चुका है चहुँ ओर तम गहरा
कोस कई जाना है मुझे अभी, पार कर यह अन्धेरा
और मुझे निभाने हैं वचन, कुछ पूरे करने हैं वादे
सोने से पहले पूरे करने हैं मन के कई इरादे। □

काम का संसार

✍ अविनाश कुमार
कनिष्ठ सहायक कर्मचारी - 2
निगमित संचार, नई दिल्ली

दिन चढ़ते ही काम का संसार,
कागज, फाइलें, कंप्यूटर की कतारा
पर इंसान भी हैं यहाँ हर ओर,
होंठों पे हंसी, दिलों में प्यार भरपूर।

बजती है घड़ी, समय का हर पल,
पर दिल की धड़कन का भी है हलचल।
साथियों के संग हँसी के पल,
काम के बीच रिश्तों का जल।

कभी थकान तो कभी उत्साह की बूँद,
हर मंजिल पर है हम सब का जुड़ावा
काम की डोर में इंसान का बंधन,
सपनों के संग चले जीवन का रथा

बॉस की डाँट, कभी सहयोग की बात,
हाथ में हाथ, बढ़े सबका साथ।
कर्मभूमि में मिलती राहत की छाँव,
जहाँ इंसानियत हो, वही सच्चा गाँव।

हर दिन की मेहनत, मिलती है पहचान,
पर असली सुख है दिलों का सम्मान।
काम से बढ़कर हैं ये रिश्ते,
जो बुनते हैं इंसानी रिश्तों के धागे। □

रसायन विभाग

✍ प्रणय दास
वरिष्ठ तकनीकी सहायक - 1
रसायन विभाग, दुलियाजान

तेल की धारा, विज्ञान की चमत्कार,
रसायन विभाग का अद्भुत संसार।
तेल की खोज, धरती की गहराई,
रसायन के संग, बनाते हैं सच्चाई।

प्रयोगशाला में रसायनज्ञ जुटते,
तेल की रहस्य की परतें छूटते।
ताप और दाब से निकालें सोना,
रसायन विभाग है सच्चा कोना।

तेल के रंग, रासायनिक खेल,
हर अणु की गाथा, है गहरी और मेला
सुरक्षित उत्पादन, देश का अभिमान,
रसायन विभाग रखे मान।

तेल की शक्ति, देश की शान,
रसायन विभाग से बढ़ता है मान।
ऑयल इंडिया का विश्वास यही,
रसायन विभाग, चमकाए ये धरती सभी। □

प्रकृति की चेतावनी

रितु कुमारी
कनिष्ठ सहायक
योजना विभाग, नोएडा

आज प्रकृति हुईरे बावरी, मांग रही जीवन उत्सर्गी
सदियों से संघर्ष कर रहा, आतुर मानव और निसर्गी
न कहता है मैं बड़ा सयाना, तुझ पर राज करूंगा मैं
तेरे ही पंखों पर चढ़कर, नित परवाज भरूंगा मैं
तेरे ही मिट्टी से मैं, हर सामान बनाया है।
चट्टानों से घर अपना मैंने, आलीशान बनाया है।
बड़े-बड़े कल्पजों से मैं, नए-नए निर्माण करूँ।
मैं हूँ अब इतना ताकतवर, जिसके चाहे प्राण हरि।
जन्म मरण के गतिविधियों को, अपने कर में ले लूँगा।
तुम्हें बना दासी मैं अपना, अपने पास सारण दूँगा।

प्रकृति नेनजरे तिरछीकर, बोली सुन मानो प्यार।
जिस दिन चाहूँ उसे दिन कर दूँ, तेरे घर वाले नारो।
पुनः आज तुम मत हो रहे, बोल रहा तेरा अभिमान।
भूल गए शायद तुम फिर से, तुम हो मेरी ही संतान।

मेरे सब बच्चों से ज्यादा, तुझको तेरा भाग दिया।
खुद पर निर्भर हो जाने को, सबसे बड़ा दिमाग दिया।
पर तुमने इस अनमोल रतन का, उल्टा ही उपयोग किया।
मेरे अंगों को काट-काट, जी भर कर उपभोग किया।
जब भी लालच दंभ, द्वेष से, पाप घड़ा भर जाता है।
छोड़ मोह ममता बच्चों का, चंडी बनती माता है।
मेरे वक्षों पर पैर टीका, नन्हा बालक ही नाचेगा।
तभी सारथी समर क्षेत्र में, ज्ञान सुधा रस बचेगा।

अभी वक्त है संभल सको, तो ही सब कुछ अच्छा होगा।
लेने से ज्यादा दे सकते हो, तो जीवन रक्षा होगा।
आपस में भी स्वार्थ छोड़कर, दया धर्म उपकार करो।
मानव हो तो कम से कम तुम, मानवता से प्यार करो। □



नराकास (दुलियाजान) को द्वितीय नराकास राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान की अध्यक्षता में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास-कार्यालय), दुलियाजान को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'ग' क्षेत्र : नराकास राजभाषा सम्मान श्रेणी में द्वितीय स्थान से सम्मानित किया गया। वर्ष 2022-23 के लिए अपने कार्य-क्षेत्र में संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए दिनांक 08 मार्च, 2024 को मेफेयर टी रिजॉर्ट, माटीगाड़ा, सिलिगुड़ी में आयोजित पूर्व एवं पूर्वोत्तर के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन-2024 के दौरान यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

नराकास (दुलियाजान) की और से श्री देवाशीष बोरा, महाप्रबंधक (जन संपर्क) एवं श्री दिगंत डेका, सदस्य-सचिव एवं अधिकारी (राजभाषा) ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों के कर-कमलों से राजभाषा शील्ड तथा प्रशस्ति-पत्र ग्रहण किया। उक्त कार्यक्रम में पूर्व एवं पूर्वोत्तर के 13 राज्यों के राजभाषा से जुड़े लगभग 900 से अधिक कर्मियों ने भाग लिया।

उक्त कार्यक्रम में श्री निशीथ प्रामाणिक, केंद्रीय राज्य मंत्री, गृह मंत्रालय



और केंद्रीय राज्य मंत्री, युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार, श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव (राजभाषा), श्रीमती मीनाक्षी जोली, संयुक्त सचिव (राजभाषा), डॉ. दिवाकर चंद्र डेका, कुलपति, मिजोरम विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अन्य विशिष्ट व्यक्तिगण उपस्थित थे।

ऑयल, पाइपलाइन मुख्यालय में राजभाषा संगोष्ठी आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी द्वारा नराकास उपक्रम (गुवाहाटी) के तत्वावधान में दिनांक 11 जनवरी, 2024 को "राजभाषा और आंचलिक भाषा का समन्वय" के विषय पर एक राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में पाइपलाइन मुख्यालय के कार्यालय प्रमुख श्री जयंत हजारिका तथा मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) माधुर्ज्य बरुआ के साथ साथ नराकास उपक्रम (गुवाहाटी) के सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधी एवं ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री माधुर्ज्य बरुआ, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने उपस्थित सभी सम्मानित अतिथि तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया।

राजभाषा संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे दैनिक पूर्वोदय के मुख्य संपादक श्री रवि शंकर रवि। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि आज का इस संगोष्ठी का विषय अपने आप एक महत्वपूर्ण विषय है। अपनी मातृभाषा और संपर्क भाषा के बीच तालमेल होना बहुत ही जरूरी है। भाषा ही ऐसा एक माध्यम है जिसके जरिए हम अपने विचारों को शाब्दिक रूप में दूसरों तक आसानी से पहुंचा सकते हैं। हम सभी अपनी मातृभाषा में सोचते हैं और अपने विचारों को दूसरी भाषा में प्रकट करते हैं। इसमें एक भाषा से दूसरी भाषा तक शब्दों का आदान प्रदान होता

रहता है। पाइपलाइन मुख्यालय के कार्यालय प्रमुख श्री जयंत हजारिका ने भी अपने सम्बोधन में कहा कि हम सभी जानते हैं कि हम अपनी भावों को पहले अपनी मातृभाषा में सोचते हैं और बाद में दूसरी भाषा में उसे प्रकट करते हैं। हमारी मातृभाषा असमिया है और संपर्क भाषा हिन्दी है। दोनों भाषाओं का ताल-मेल होना बहुत ही जरूरी है। इसके अलावा उपस्थित प्रतिभागियों ने भी अपना विचार रखा। संगोष्ठी के दौरान दिनांक 13 दिसंबर, 2023 को आयोजित संक्षिप्त अनुवाद प्रतियोगिता के विजय प्रतियोगियों को मुख्य अतिथि महोदय के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया। कुमारी नीलम, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, ऑयल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ संगोष्ठी का सफल समापन हुआ।



ऑयल की अध्यक्षता में नराकास, दुलियाजान की 45^{वीं} बैठक संपन्न

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान की अध्यक्षता में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दुलियाजान की 45^{वीं} बैठक 21 मई 2024 को क्षेत्र सम्मेलन कक्ष, ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। श्री रथिन कलिता, महाप्रबंधक (जन संपर्क) की अध्यक्षता में आयोजित उक्त बैठक में श्री बदरी यादव, परामर्शदाता (स.नि.), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर), गुवाहाटी, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा) एवं सदस्य-सचिव (नराकास-दुलियाजान) उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त दुलियाजान और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के विभागाध्यक्षों एवं राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों ने बैठक में उपस्थित होकर अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की।

नराकास, दुलियाजान के सदस्य सचिव श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा), श्री रथिन कलिता, महाप्रबंधक (जन संपर्क) ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में वर्ष 2022-23 के लिए नराकास (दुलियाजान) को राजभाषा विभाग द्वारा नराकास राजभाषा सम्मान मिलने पर सभी कार्यालयों को शुभकामनाएं प्रदान की तथा राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में इस प्रकार निरंतर सहयोग देने हेतु उपस्थित सभी से अपील की। उन्होंने सदस्य कार्यालयों से अधिक संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित होने पर संतोष व्यक्त करते हुए ऐसी सक्रियता बनाए रखने का सदस्यों से आह्वान किया। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिन्दी में करने के लिए



सभी को प्रेरित करें। श्री दिगंत डेका, राजभाषा अधिकारी एवं सदस्य सचिव, नराकास (दुलियाजान) के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही नराकास, दुलियाजान की 45^{वीं} बैठक का समापन हुआ।



ऑयल के क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान में राजभाषा उत्सव- 2024 का आयोजन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की नीतियों एवं निर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करते हुए ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में सितंबर महीने में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ राजभाषा उत्सव-2024 मनाया गया।



इस अवसर पर दिनांक 02.09.2024 को ऑयल के क्षेत्र सम्मेलन कक्ष, जनरल ऑफिस बिल्डिंग में एक औपचारिक उद्घाटन कार्यक्रम सह राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। श्री देवाशीष बोरा, मुख्य महाप्रबंधक (क्षेत्र प्रशासन), ऑयल ने औपचारिक रूप से राजभाषा उत्सव-2024 का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में सभी से आग्रह किया कि राजभाषा उत्सव के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता में अधिक से अधिक संख्या में भाग लें। उन्होंने कहा कि राजभाषा के विकास के लिए हमें सिर्फ राजभाषा उत्सव मनाने में ही सीमित नहीं रहना है, इसके लिए हमारे दैनन्दिन कार्यों में राजभाषा हिन्दी को शामिल करना होगा। उक्त उद्घाटन कार्यक्रम तथा प्रतियोगिता में क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान स्थित विभिन्न विभागों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा) ने राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशानिर्देशों तथा राजभाषा महोत्सव के आयोजन के उद्देश्य के बारे में उपस्थित सभी को अवगत कराया। उन्होंने राजभाषा उत्सव-2024

के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सक्रियपूर्वक भाग लेने हेतु सभी से आग्रह किया।

राजभाषा उत्सव के दौरान विभिन्न अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके आश्रितों के लिए अलग-अलग वर्गों में अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताओं यथा:- राजभाषा ज्ञान, क्वीज, हिन्दी टिप्पण/आलेखन एवं अनुवाद, ऑनलाइन राजभाषा प्रश्नोत्तरी, कविता पाठ, हिन्दी स्लोगन लेखन, हिन्दी निबंध लेखन का आयोजन किया गया।

इसके अलावा ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान द्वारा मनाए गए राजभाषा उत्सव के अंतर्गत दुलियाजान और उसके आसपास के विभिन्न विद्यालयों में चित्रांकन/पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कक्षा 8, 9, 10 और 11 के लगभग 500 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे रचनात्मकता और उत्साह से भरा एक जीवंत माहौल देखने को मिला।



ऑयल, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर में राजभाषा संवाद का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान क्षेत्र द्वारा दिनांक 14 मई 2024 को राजस्थान क्षेत्र के कार्मिकों एवं नराकास के सदस्यों को राजभाषा में कार्य प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया था। कार्यशाला में ऑयल के कार्मिकों के साथ-साथ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य एवं स्थानीय हिन्दी प्रेमी भी उपस्थित थे।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में उर्दू साहित्य के जाने माने हस्ताक्षर शीन काफ़ निज़ाम, साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में बालेंदु शर्मा 'दाधीच' (राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता), डॉ. कुमार विमलेंदु सिंह (सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं फिल्म समीक्षक), श्री अमित चौधरी (वरिष्ठ प्रबंधक-राजभाषा एवं सदस्य सचिव नराकास), डॉ. विशाल विक्रम सिंह (सहायक प्रोफेसर, जयपुर विश्वविद्यालय), डॉ. गर्जेन्द्र पाण्डेय (प्रसिद्ध कबीर गायक) एवं अतिथि वक्ता के रूप में डॉ. रमन जी झा, महाप्रबंधक (राजभाषा)-ऑयल निगमित कार्यालय, नोएडा एवं



शिवचरण बैरवा, सदस्य सचिव नराकास क्रमांक-01 ने अपने विद्वतापूर्ण विचारों से प्रतिभागियों का ज्ञानवर्धन किया।

राजस्थान क्षेत्र के कार्यकारी निदेशक महोदय श्री अगाध मेधि एवं महाप्रबंधक (मा.सं एवं प्रशा.) श्री रितुपर्ण शर्मा ने अपनी गरिमामय उपस्थिति से कार्यशाला को सफल बनाया।



ऑयल, राजस्थान क्षेत्र में राजभाषा उत्सव 2024 का आयोजन

भारत सरकार के निर्देशानुसार राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं प्रोत्साहन हेतु ऑयल इंडिया लिमिटेड के राजस्थान क्षेत्र में दिनांक 14.09.2024 से 30.09.2024 तक राजभाषा उत्सव 2024 का आयोजन किया गया। राजभाषा उत्सव 2024 का उद्घाटन समारोह 16.09.2024 को 'राजभाषा प्रतिज्ञा' के आयोजन के साथ प्रारंभ हुआ जिसमें कार्यालय के सभी कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और उपमहाप्रबंधक (मा. सं. एवं प्रशा.) ने समस्त कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं प्रयोग हेतु प्रतिज्ञा दिलाई। राजभाषा उत्सव के दौरान कार्यालय के समस्त कार्मिकों एवं उनके आश्रितों के लिए अनेक प्रतियोगिताओं यथा; गद्य लेखन, हिन्दी ईमेल लेखन, हिन्दी डिक्टेशन (श्रुतिलेख), अनुवाद एवं टिप्पणी लेखन, आशु भाषण, हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिन्दी स्लोगन लेखन व पोस्टर डिजाइनिंग प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कार्मिकों को दो वर्गों क्रमशः हिन्दी भाषी व अन्य भाषा भाषी के रूप में वर्गीकृत किया गया था। इन प्रतियोगिताओं में सभी कार्मिकों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया और कार्यक्रम की सार्थकता सिद्ध की। कार्मिकों के आश्रितों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं में भी प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और कार्यक्रम को सफल बनाया।



राजभाषा उत्सव के समापन समारोह के क्रम में दिनांक 13.11.2024 को पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री महिपाल सिंह राठौड़, विभागाध्यक्ष- हिन्दी विभाग, जयनरायण व्यास विश्वविद्यालय व विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अगाध मेधि, कार्यकारी निदेशक, रा.क्ष. ने अपने कर कमलों से प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया। समापन कार्यक्रम में समस्त विभागीय राजभाषा अधिकारियों को उनके द्वारा विभागीय स्तर पर राजभाषा का उचित कार्यान्वयन सुनिश्चित कराने के लिए कार्यकारी निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया।

केजीबी एवं एमबीपी कार्यालय में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के केजीबी एवं एमबीपी कार्यालय में पहली बार हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन दिनांक 06 अक्तूबर 2024 को काकीनाडा में किया गया। विख्यात हास्य कवि रोहित शर्मा, हास्य कवि श्री दीपक सैनी तथा युवा हास्य कवि श्री राकेश तिवारी ने बहुप्रतीक्षित सम्मेलन को रंगारंग बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। खचाखच भरे हॉल में उपस्थित कार्मिकों तथा अन्य प्रतिष्ठित संस्थाओं से पधारे आमंत्रित अतिथियों ने सम्मेलन का भरपूर आनन्द उठाया। हंसी और ठहाकों के बीच कवियों ने जितनी सुंदरता से गंभीर सीख दी वह काबिले तारीफ थी। कार्यक्रम की शुरुआत मंच पर दीप प्रज्वलन के साथ हुई। कार्यक्रम के प्रारम्भ में स्वागत स्वरूप श्री अंजन ज्योति फूकन कार्यपालक निदेशक (केजीबी एवं एमबीपी कार्यालय) ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि केजीबी एवं एमबीपी कार्यालय द्वारा पिछले कई वर्षों से हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन करने का प्रयास किया जा रहा था और आज ऐसा सम्भव हो पाया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती तनुश्री अग्रवाल प्रबंधक (सामग्री) ने किया। हास्य कवि सम्मेलन के लिए श्री अशोक



कुमार उप महाप्रबंधक भूविज्ञान द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। उपस्थित कवियों को कोलकाता कार्यालय द्वारा स्मृति चिन्ह दिए जाने के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान क्षेत्र में कवि सम्मेलन का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान क्षेत्र द्वारा दिनांक 11 अगस्त 2024 को एक भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कवि सम्मेलन में देश के विख्यात कवियों श्री एहसान कुरैशी, श्री दिनेश बावरा, श्रीमती मुमताज़ नसीम, श्री रोहित शर्मा एवं श्री राकेश तिवारी ने अपनी कविताओं के माध्यम से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में श्री रामफल पवार, सेवानिवृत्त आईपीएस एवं आईईएम-ऑयल उपस्थित थे। श्री यू. एन. जेना, कार्यकारी निदेशक (संविदा एवं क्रय), ऑयल, श्री अगाध मेधि, कार्यकारी निदेशक (रा.क्षे.) एवं ऑयल इंडिया लिमिटेड के अन्य क्षेत्रों से पधारे सम्मानित अतिथियों के साथ अन्य गणमान्य अतिथियों की गरिमामय उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा में चार चाँद लग गये।



निगमित कार्यालय, नोएडा में राजभाषा उत्सव-2024 का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के निगमित कार्यालय, नोएडा में राजभाषा उत्सव-2024 का आयोजन 14 सितंबर से 29 सितंबर 2024 तक किया गया। इस दौरान अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताएं यथा:- हिन्दी भाषा ज्ञान, हिन्दी वाद-विवाद और हिन्दी वर्तनी शोधना प्रतियोगिता (सभी दो श्रेणियों में हिन्दी एवं हिन्दीतर भाषी हेतु) का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ने काफी संख्या में भाग लिया। हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 18 नवम्बर 2024 को किया गया। इस अवसर पर अपने स्वागत वक्तव्य में डॉ. आर. झा, महाप्रबंधक (राजभाषा) ने कहा कि भारत की सभ्यता और भाषायी संस्कृति की जड़े गहरी हैं और ये विविध संस्कृतियों के सम्मिश्रण से गुजरकर सदियों से विकसित हुई है। भाषायी विविधता एवं बहुआयामी संस्कृति के बावजूद राजभाषा हिन्दी ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की धारणा को पुष्ट किया है। हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का सबसे शक्तिशाली एवं प्रभावी माध्यम है। विश्व के सभी प्रमुख विकसित एवं विकासशील देश अपनी-अपनी भाषाओं में ही अपना सरकारी कामकाज करके उन्नत हुए हैं। हिन्दी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। यह देश के अधिकांश लोगों द्वारा पारस्परिक व्यवहार में प्रयुक्त की जाती है। हिन्दी के इसी महत्व को देखते हुए भारतीय संविधान में इसे संघ सरकार की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। देश और समाज के व्यापक हित में राजभाषा हिन्दी के प्रति जनता और सरकारी तंत्र दोनों को अधिक



से अधिक संवेदनशील और सक्रिय बनाए जाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री अशोक दास, निदेशक (मानव संसाधन) ने कहा कि मैं अपनी ओर से उन सभी प्रतिभागियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ कि आपने पूरी सक्रियता से सभी प्रतियोगिताओं में भाग लिया और साथ ही उन सभी पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को भी हार्दिक बधाई देता हूँ। मित्रों, अब समय आ गया है कि सभी कार्यों को अपनी भारतीय भाषाओं और हिन्दी में किया जाए। यह तर्क अब निर्मूल हो चुका है कि अपनी भाषाओं में काम करके आप विकसित और विकासशील विश्व में पिछड़ जायेंगे।

अंत में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। धन्यवाद ज्ञापन और कार्यक्रम का संचालन डॉ. आर. झा, महाप्रबंधक (राजभाषा) ने किया।

ऑयल, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में राजभाषा उत्सव-2024 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह सफलतापूर्वक संपन्न

दिनांक 30.09.2024 को ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में 1 से 30 सितंबर, 2024 तक आयोजित राजभाषा उत्सव-2024 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री अरुणज्योति बरुआ, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) की अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम में श्री राजीव कुमार नायक, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे। इसके अलावा पाइपलाइन मुख्यालय के सभी विभागाध्यक्ष तथा अन्य अधिकारी/कर्मचारी भी उपस्थित थे। श्री अरुणज्योति बरुआ एवं श्री हरेकृष्ण बर्मन ने समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत किया तथा ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए किये जाने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रदान की। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री राजीव कुमार नायक ने अपने संबोधन में कहा कि भाषा ही ऐसा के माध्यम है जिसके जरिए हम अपने विचारों को शाब्दिक रूप में दूसरों तक आसानी से पहुंचा सकते हैं। जब भी मौका मिले भाषा सीखने की कोशिश करनी चाहिए। समारोह में श्री राम अकबाल यादव, अनुसंधान अधिकारी, भारत सरकार भी उपस्थित थे। उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा जारी विभिन्न दिशानिर्देशों के बारे में



उपस्थित सभी को अवगत कराया।

उक्त कार्यक्रम के दौरान राजभाषा उत्सव-2024 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को मंचासीन अतिथियों के कर कमलों से पुरस्कार प्रदान किया गया। समापन समारोह के दौरान खुला प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया, जिसका संचालन श्री आदर्श गुप्ता, अधीक्षण अभियंता (अग्निशमन) ने किया। श्री हरेकृष्ण बर्मन के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह संपन्न हुआ।

ऑयल, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी द्वारा दिनांक 02 मई, 2024 को एक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में श्री जयंत हजारिका, कार्यकारी निदेशक (पाला सेवाएं), श्री अरुण ज्योति बरुआ, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) के साथ साथ ऑयल, पाइपलाइन मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। सहायक निदेशक (परामर्शदाता), राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार, गुवाहाटी के श्री बट्टी यादव राजभाषा कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यशाला में श्री जयंत हजारिका, कार्यकारी निदेशक (पाला सेवाएं) ने उपस्थित सभी अधिकारियों से आग्रह करते हुए कहा है कि आपलोग अपना यथासंभव काम हिन्दी में करने का प्रयास करें ताकि हम भारत सरकार द्वारा निर्धारित वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। श्री अरुण ज्योति बरुआ, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कहा कि पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में काफी उपलब्धियां हासिल की है और इन उपलब्धियों के लिए आप सभी बधाई का पात्र



है। उन्होंने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यालय के यथासंभव काम हिंदी में करने की अपील की। कार्यशाला की शुरुआत में श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यशाला के उद्देश्य की व्याख्या की। उन्होंने कार्यालय द्वारा किए गए राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों के बारे में उपस्थित सभी को अवगत कराया। श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का सफल समापन हुआ।

ऑयल पंप स्टेशन नंबर 3, जोरहाट में राजभाषा उत्सव 2024 का आयोजन

सितंबर 2024 के दौरान ऑयल इंडिया लिमिटेड के पंप स्टेशन नंबर 3, जोरहाट ने बड़े उत्साह के साथ राजभाषा उत्सव 2024 का आयोजन किया, जिसमें पंप स्टेशन नंबर 3, जोरहाट के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों एवं उनके परिवारों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में बढ़ावा देना था। इस कार्यक्रम में कई तरह की आकर्षक प्रतियोगिताएँ और गतिविधियाँ शामिल थीं। एक हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें प्रतिभागियों को काव्य-छंदों के माध्यम से अपने विचार और भावनाओं को व्यक्त करने का मौका मिला। इसके बाद एक खुलामंच प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया, जिसमें अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवारों की सक्रिय भागीदारी रही, जिसमें हिंदी साहित्य, भाषा, सामान्य ज्ञान और भारतीय संस्कृति के बारे में उनके ज्ञान का परीक्षण किया गया। कार्यक्रम में युवा सदस्यों के लिए मौके पर ही कविता और निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। बच्चों ने अपनी सहज रचनाओं के माध्यम से अपनी रचनात्मकता और भाषा पर पकड़ का प्रदर्शन किया। कॉलोनी की महिलाओं के लिए एक निबंध प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें उन्हें दैनिक जीवन में हिंदी के महत्व से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने विचार



व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम में जे.बी. कॉलेज, जोरहाट के हिंदी विभाग के सहायक प्रोफेसर सुश्री मोनमी बोरठाकुर को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री द्विपेंद्र दास, महाप्रबंधक (प्रचालन), पीएस-3 ने हिंदी के महत्व को रेखांकित किया और पंप स्टेशन 3, जोरहाट के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपना यथासंभव काम राजभाषा हिन्दी में करने की अपील की। राजभाषा उत्सव 2024 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित करने के साथ कार्यक्रम का सफल समापन हुआ।

सोनापुर (पंप स्टेशन नंबर 8) में राजभाषा उत्सव 2024 का आयोजन

पंप स्टेशन नंबर 8, में राजभाषा उत्सव 2024 का आयोजन बड़े उत्साह के साथ किया, जिसमें कर्मचारियों, अधिकारियों और उनके परिवारों ने बड़े ही हर्षोल्लास के साथ उक्त कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में बढ़ावा देना और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देना था।

कार्यक्रम में विभिन्न आकर्षक प्रतियोगिताएँ और गतिविधियाँ शामिल थीं। एक हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिससे प्रतिभागियों को काव्यात्मक छंदों के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर मिला। इसके बाद एक खुला क्विज़ सत्र हुआ, जिसमें कर्मचारियों, अधिकारियों और उनके परिवारों ने सक्रिय भागीदारी दिखाई, जिससे उन्होंने हिंदी साहित्य, भाषा, सामान्य जागरूकता और भारतीय संस्कृति के बारे में अपने ज्ञान का परीक्षण किया।

इस अवसर पर, श्री जगदीश मलिक, हिंदी शिक्षक, ओलिविया एनलाइटेड इंग्लिश स्कूल, सिलीगुड़ी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री अरिंदम



दास, महाप्रबंधक (प्रचालन), पीएस-8 ने संगठन के विविध कार्यबल में एकता को बढ़ावा देने के लिए हिंदी को सामान्य संचार माध्यम के रूप में उपयोग करने के महत्व पर जोर दिया।

कार्यक्रम का समापन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण के साथ हुआ। कुल मिलाकर, राजभाषा उत्सव एक शानदार सफलता थी, जिसने हिंदी को बढ़ावा दिया और भाषा एवं संस्कृति का साझा उत्सव मनाने में समुदाय को एकजुट किया।

